

अध्याय ~13

हिन्दी व्याकरण

व्याकरण के अन्तर्गत किसी भाषा की वर्ण से लेकर वाक्य के गठन तक की सम्पूर्ण संरचनाओं तथा नियमों का अध्ययन किया जाता है तथा भाषा के शुद्ध व सार्थक प्रयोग का ज्ञान कराया जाता है।



व्याकरण का अर्थ है-व्याकृत या विश्लेषण करने वाला शास्त्र। व्याकरण वह शास्त्र है, जो किसी भाषा के स्वरूप को स्पष्ट करता है तथा उसे शुद्ध उच्चारित करने, लिखने और समझने की विधि बताता है। इसके द्वारा भाषा विशेष के वे नियम स्पष्ट किए जाते हैं, जो शिष्ट एवं सुशिक्षित जनों के भाषा-प्रयोग में दिखाई देते हैं। व्याकरण के अन्तर्गत संज्ञा, लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया इत्यादि का वर्णन किया गया है। हिन्दी व्याकरण के अन्तर्गत इनका विशेष स्थान है।

संज्ञा

- संज्ञा का शाब्दिक अर्थ नाम है। किसी वस्तु, व्यक्ति (जिसका अस्तित्व होता है या होने की कल्पना की जा सकती है), स्थान इत्यादि के नाम को ही संज्ञा (Noun) कहा जाता है।
- अन्य शब्दों में, जिन विकारी शब्दों से किसी व्यक्ति, स्थान, प्राणी, गुण, काम, भाव इत्यादि का बोध होता है, उन्हें संज्ञा कहते हैं। इस प्रकार नाम और संज्ञा समानार्थक शब्द हैं। व्याकरण में संज्ञा शब्द ही प्रचलित है।

संज्ञा के प्रकार

अर्थ के आधार पर संज्ञा पाँच प्रकार की होती है

- जातिवाचक संज्ञा
- व्यक्तिवाचक संज्ञा
- भाववाचक संज्ञा
- समूहवाचक संज्ञा
- द्रव्यवाचक संज्ञा

1. जातिवाचक संज्ञा

वह संज्ञा शब्द जिनसे किसी एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का बोध होता है अर्थात् वे संज्ञा शब्द जहाँ एक ही शब्द से पूरी जाति का बोध हो जाता है, उन्हें जातिवाचक (Common Noun) संज्ञा कहते हैं; जैसे— घर, पहाड़, नदी, शहर, पक्षी, पशु इत्यादि।

घर कहने से सभी तरह के घरों का, पहाड़ कहने से संसार के सभी पहाड़ों का और नदी कहने से सभी नदियों का जातिगत बोध होता है। जातिवाचक संज्ञाओं की स्थितियाँ इस प्रकार हैं; जैसे—

- वस्तुओं के नाम मकान, कुर्सी, मेज, पुस्तक, कलम, चाकू इत्यादि।
- पशु-पक्षियों के नाम बैल, घोड़ा, हिरण, तोता, मैना, मोर इत्यादि।
- प्राकृतिक तत्त्वों के नाम बिजली, वर्षा, आँधी, तूफान, भूकम्प, ज्वालामुखी, ओला वृष्टि, हिमपात इत्यादि।
- सम्बन्धियों, व्यवसायों, पदों और कार्यों के नाम भाई, माँ, डॉक्टर, वकील, मन्त्री, अध्यक्ष, किसान, अध्यापक, मजदूर इत्यादि।

2. व्यक्तिवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से किसी एक ही वस्तु, व्यक्ति या स्थान इत्यादि का बोध होता है, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun) कहते हैं; जैसे—

- व्यक्तियों के नाम राम, कृष्ण, गौतम बुद्ध, हनुमान, ईसा मसीह इत्यादि।
- फलों के नाम आम, अमरूद, सेब, संतरा, टमाटर, मिर्च, केला इत्यादि।
- ग्रन्थों के नाम रामायण, रामचरितमानस, कामायनी, कुरान, साकेत इत्यादि।
- समाचार-पत्रों के नाम हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण, अमर उजाला इत्यादि।
- नदियों के नाम गंगा, ब्रह्मपुत्र, यमुना, गोदावरी, कावेरी, सिन्धु इत्यादि।

जातिवाचक और व्यक्तिवाचक संज्ञा में अन्तर

| जातिवाचक संज्ञा | कवि | स्त्री | नदी | नगर | पर्वत |
|--------------------|--------|--------|-------|--------|--------|
| व्यक्तिवाचक संज्ञा | सूरदास | राधा | यमुना | मुम्बई | हिमालय |

3. भाववाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से किसी वस्तु के गुण, दशा, भाव या अवस्था का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun) कहते हैं; जैसे—

- गुण के अर्थ में सुन्दरता, कुशाग्रता, बुद्धिमत्ता इत्यादि।
- अवस्था के अर्थ में जवानी, बचपन, बुढ़ापा इत्यादि।
- दशा के अर्थ में उन्नति, अवनति, चढ़ाई, ढलान इत्यादि।
- भाव के अर्थ में मित्रता, शत्रुता, कृपणता इत्यादि।

इन शब्दों से भाव विशेष का बोध होता है। अतः ये सभी भाववाचक संज्ञा शब्द हैं। भाववाचक संज्ञाएँ मुख्यतः दो प्रकार की होती हैं

- स्वतन्त्र भाववाचक संज्ञाएँ ईर्ष्या, द्वेष, सुख, दुःख, लोभ इत्यादि स्वतन्त्र भाववाचक संज्ञा के उदाहरण हैं। इन्हें वाक्यों में स्वतन्त्र रूप में प्रयोग किया जाता है।
- परतन्त्र कुछ भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय में आव, अन, ई, ता, त्व, पन, आई इत्यादि प्रत्यय जोड़कर किया जाता है, इन्हें ही परतन्त्र भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—
अपना + त्व = अपनत्व, लिखा + ई = लिखाई इत्यादि।

भाववाचक संज्ञाओं का विशिष्ट परिवर्तन

जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा

| जातिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा | जातिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा |
|-----------------|--------------------|-----------------|----------------|
| मनुष्य | मनुष्यता/मनुष्यत्व | पुरुष | पुरुषत्व |
| लड़का | लड़कपन | नारी | नारीत्व |

व्यक्तिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा

| व्यक्तिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा | व्यक्तिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा |
|--------------------|----------------|--------------------|----------------|
| राम | रामत्व | शिव | शिवत्व |
| रावण | रावणत्व | गुरु | गुरुत्व |

सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा

| सर्वनाम | भाववाचक संज्ञा | सर्वनाम | भाववाचक संज्ञा |
|---------|----------------|---------|----------------|
| अपना | अपनापन/अपनत्व | मम | ममत्व/ममता |
| अहं | अहंकार | निज | निजत्व |

विशेषण से भाववाचक संज्ञा

| विशेषण | भाववाचक संज्ञा | विशेषण | भाववाचक संज्ञा |
|--------|----------------|--------|-------------------|
| कठोर | कठोरता | सुन्दर | सुन्दरता/सौन्दर्य |
| चौड़ा | चौड़ाई | ललित | ललित्य |
| वीर | वीरता/वीरत्व | भोला | भोलापन |

क्रिया से भाववाचक संज्ञा

| क्रिया | भाववाचक संज्ञा | क्रिया | भाववाचक संज्ञा |
|--------|----------------|--------|----------------|
| घबराना | घबराहट | पढ़ना | पढ़ाई |
| खेलना | खेल | मिलना | मिलाप |

अव्यय से भाववाचक संज्ञा

| अव्यय | भाववाचक संज्ञा | अव्यय | भाववाचक संज्ञा |
|-------|----------------|-------|----------------|
| दूर | दूरी | निकट | निकटता |
| नीचे | नीचाई | समीप | सामीप्य |

4. समूहवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से एक ही जाति की वस्तुओं के समूह (समुदाय) का बोध होता है, उन्हें समूहवाचक संज्ञा (Collective Noun) कहते हैं; जैसे—

- **व्यक्तियों के समूह** कक्षा, सेना, समूह, संघ, टुकड़ी, गिरोह और दल, वर्ग, टीम, समिति, परिवार, सभा इत्यादि।
- **वस्तुओं के समूह** कुंज, ढेर, गट्ठर, गुच्छा, ताश, टी-सेट इत्यादि।

5. द्रव्यवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से किसी ऐसे पदार्थ (सामग्री) या द्रव्य का बोध होता है, जिसे हम नाप-तौल सकते हैं लेकिन गिन नहीं सकते, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा (Material Noun) कहते हैं; जैसे—

- **धातुओं (ठोस) के नाम** सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा, पीतल इत्यादि।
- **पदार्थों के नाम** दूध, दही, घी, तेल, पानी इत्यादि।
- **गैसीय पदार्थों के नाम** हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, धुआँ इत्यादि।

अतः ये सभी द्रव्यवाचक संज्ञा शब्द हैं।

संज्ञाओं के विभिन्न प्रयोग

संज्ञाओं के विभिन्न प्रयोग निम्न प्रकार हैं

जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक के रूप में प्रयोग

जब कोई जातिवाचक संज्ञा किसी विशेष व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हो, तब जातिवाचक संज्ञा होते हुए भी वह व्यक्तिवाचक संज्ञा बन जाती है; जैसे—

- **पंडितजी** देश के लिए कई बार जेल गए।
- **गाँधीजी** ने देश के लिए अपना तन-मन धन लगा दिया।

यहाँ 'पंडितजी' और 'गाँधीजी' शब्द जातिवाचक होते हुए भी व्यक्ति विशेष अर्थात् पंडित जवाहरलाल नेहरू और महात्मा गाँधी के लिए प्रयुक्त हुए हैं। अतः यहाँ ये दोनों शब्द व्यक्तिवाचक हो गए हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक के रूप में प्रयोग

व्यक्तिवाचक संज्ञा का प्रयोग सदा एकवचन में होता है, परन्तु जब कोई व्यक्तिवाचक संज्ञा किसी व्यक्ति विशेष का बोध न कराकर उस व्यक्ति के गुण-दोषों वाले व्यक्तियों (अन्य) का बोध कराती है, तब वह संज्ञा व्यक्तिवाचक न रहकर जातिवाचक संज्ञा बन जाती है; जैसे—

- कलियुग में **हरिश्चन्द्रों** की कमी नहीं है।
- यहाँ 'हरिश्चन्द्र' व्यक्तिवाचक संज्ञा उसके 'सत्य' और 'निष्ठा' के गुण को प्रकट करने से जातिवाचक संज्ञा बन गई है।

- हमें भारत में **जयचन्दों** पर कड़ी नजर रखनी चाहिए।

यहाँ 'जयचन्द' शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा होते हुए भी उसके 'विश्वासघात' गुण को प्रकट करने के कारण अन्य व्यक्तियों का बोध कराती है। अतः यह जातिवाचक संज्ञा है।

द्रव्यवाचक, भाववाचक एवं समूहवाचक संज्ञाओं का प्रयोग

जातिवाचक के रूप में द्रव्यवाचक, भाववाचक और समूहवाचक संज्ञाओं का प्रयोग बहुवचन में नहीं होता, इसका कारण यह है कि जब इन्हें बहुवचन के रूप में प्रयोग करते हैं, तो ये सभी जातिवाचक संज्ञा में परिवर्तित हो जाती हैं; जैसे—

- यहाँ **तेल** बिकता है।
उपर्युक्त उदाहरण में तेल का एकवचन में प्रयोग किया गया है। इसलिए तेल (द्रव्यवाचक संज्ञा) है।
- वहाँ **अनेक प्रकार के तेल** बिकते हैं।
उपर्युक्त उदाहरण में तेल का बहुवचन में प्रयोग किया गया है। इसलिए तेल (जातिवाचक संज्ञा) है।
- राहुल की **चोरी** पकड़ी गई।
उपर्युक्त उदाहरण में चोरी का एकवचन में प्रयोग किया गया है। इसलिए चोरी (भाववाचक संज्ञा) है।
- दिल्ली के वसंतकुंज में कई **चोरियाँ** हुईं।
उपर्युक्त उदाहरण में चोरी का बहुवचन में प्रयोग किया गया है। इसलिए चोरियाँ (जातिवाचक संज्ञा) है।
- **सेना** युद्ध के लिए तैयार है।
उपर्युक्त उदाहरण में सेना का एकवचन में प्रयोग किया गया है। इसलिए सेना (समूहवाचक संज्ञा) है।
- **सेनाओं** में भयंकर युद्ध हुआ।
उपर्युक्त उदाहरण में सेनाओं का बहुवचन में प्रयोग किया गया है। इसलिए सेनाओं (जातिवाचक संज्ञा) है।

विशेषण का प्रयोग संज्ञा के रूप में

जहाँ विशेषण के साथ विशेष्य का अभाव हो तब उस विशेषण का प्रयोग संज्ञा के रूप में किया जाता है; जैसे—

- राम बहुत अमीर है। (विशेष्य-राम, विशेषण-अमीर)
- गरीबों की सहायता करो। (जातिवाचक संज्ञा-गरीबों)
- (यहाँ गरीबों शब्द से समस्त गरीब व्यक्तियों का बोध हो रहा है।)

क्रिया का प्रयोग संज्ञा के रूप में

जब किसी क्रिया का प्रयोग वाक्य में संज्ञा के स्थान पर हो, तो वह क्रियार्थक संज्ञा कहलाती है; जैसे—

- हँसना सेहत के लिए लाभकारी होता है।
- दौड़ना अच्छी आदत है।

अव्यय का प्रयोग संज्ञा के रूप में

अव्यय (वाह-वाह, हाँ-हाँ, हाय-हाय) का प्रयोग कभी-कभी संज्ञा के रूप में होता है; जैसे—

- क्यों हाय-हाय कर रहे हो।
- मोहन के जीतने के बाद बड़ी वाह-वाह हो रही है।
- यहाँ 'हाय-हाय' तथा 'वाह-वाह' विस्मयादिबोधक अव्ययों का संज्ञा के रूप में प्रयोग हुआ है।

लिंग

- लिंग शब्द संस्कृत भाषा का है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'चिह्न' है। जिस चिह्न द्वारा यह जाना जाए कि अमुक शब्द पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे लिंग (Gender) कहते हैं।
- अन्य शब्दों में, संज्ञा के जिस रूप से पुरुषत्व या स्त्रीत्व का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं। लिंग द्वारा ही संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण इत्यादि शब्दों की जाति का बोध होता है। हिन्दी में लिंग दो प्रकार के होते हैं

1. पुल्लिंग

जिन संज्ञा शब्दों से यथार्थ या कल्पित पुरुषत्व का बोध होता है, उन्हें पुल्लिंग (Masculine) कहते हैं; जैसे—लड़का, बैल, घोड़ा, कुत्ता, शेर, पेड़, नगर इत्यादि।

यहाँ 'लड़का', 'बैल', 'घोड़ा' से यथार्थ पुरुषत्व तथा 'पेड़' और 'नगर' से कल्पित पुरुषत्व का बोध होता है।

2. स्त्रीलिंग

जिन संज्ञा शब्दों से यथार्थ या कल्पित स्त्रीत्व का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिंग (Feminine) कहते हैं; जैसे—लड़की, गाय, लता, पुरी इत्यादि।

यहाँ 'लड़की' और 'गाय' यथार्थ स्त्रीत्व का तथा 'लता' और 'पुरी' से कल्पित स्त्रीत्व का बोध होता है।

हिन्दी में लिंग निर्धारण

हिन्दी में लिंग का निर्धारण तीन प्रकार से किया गया है

1. रूप के आधार पर
2. अर्थ के आधार पर
3. प्रयोग के आधार पर

1. रूप के आधार पर

रूप का शाब्दिक अर्थ 'बनावट' है। शब्द रचना में प्रत्यय तथा स्वर के प्रयोग को आधार बनाकर शब्द के लिंग का निर्धारण होता है; जैसे—

पुल्लिंग शब्द

अकारान्त शब्द, अकारान्त भाववाचक संज्ञाएँ तथा कुछ प्रत्यय वाले शब्द पुल्लिंग होते हैं; जैसे—

- अकारान्त शब्द—गौरव, चन्द्रमा, कुत्ता, कपड़ा, समुद्र इत्यादि।
- भाववाचक संज्ञा—जिनके अन्त में भाववाचक संज्ञा (त्व, ता, य, व इत्यादि) लगी होती है; जैसे—अपनत्व, गुरुत्व, सुन्दरता इत्यादि।
- प्रत्यय शब्द—जिन शब्दों के अन्त में पा, पन, आव, आवा, खाना प्रत्यय जुड़े होते हैं; जैसे—दवाखाना, बचपन, मोटापा, बुलावा, जुड़ाव इत्यादि।

स्त्रीलिंग शब्द

आकारान्त शब्द, इकारान्त शब्द तथा कुछ प्रत्यय वाले शब्द स्त्रीलिंग शब्द होते हैं; जैसे—

- आकारान्त या ईकारान्त शब्द—लता, कविता, उमा इत्यादि।
- इकारान्त/ईकारान्त शब्द—कवि, हानि, नदी इत्यादि।
- (नोट: कुछ इकारान्त/ईकारान्त शब्द पुल्लिंग होते हैं; जैसे—कवि, रवि, हाथी, दही, पानी।)
- प्रत्यय शब्द—जिन शब्दों के अन्त में आई, इया, आवट, आहट, ता, इमा इत्यादि प्रत्यय होते हैं, वे स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे—पढ़ाई, लुटिया, बनावट, घबराहट, मित्रता, लालिमा इत्यादि।

2. अर्थ के आधार पर

बहुत-से शब्द अर्थ की दृष्टि से तो समान होते हैं, परन्तुलिंग की दृष्टि से भिन्न होते हैं; जैसे—

| पुल्लिंग | स्त्रीलिंग | पुल्लिंग | स्त्रीलिंग |
|----------|------------|----------|------------|
| दादा | दादी | अध्यापक | अध्यापिका |
| कवि | कवयित्री | लेखक | लेखिका |
| घोड़ा | घोड़ी | शेर | शेरनी |
| नर | मादा | श्रीमान | श्रीमती |
| सिंह | सिंहनी | शिष्य | शिष्या |

स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग शब्दों का उचित प्रयोग करने से ही वाक्य शुद्ध होता है; जैसे—

- रूपा विद्वान है। (अशुद्ध)
- रूपा विदुषी है। (शुद्ध)
- रेखा अच्छी कवि है। (अशुद्ध)
- रेखा अच्छी कवयित्री है। (शुद्ध)

3. प्रयोग के आधार पर

प्रयोग के आधार पर लिंग का निर्धारण करने हेतु संज्ञा, सर्वनाम, कारक-चिह्न और विशेषण को आधार बनाया जाता है; जैसे—

- सोहन अच्छा लड़का है। (पुल्लिंग-सोहन)
- रीमा अच्छी लड़की है। (स्त्रीलिंग-रीमा)
- यह विनय की पुस्तक है। (स्त्रीलिंग-पुस्तक)
- यह विनय का पेन है। (पुल्लिंग-पेन)

शब्दों में स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग की पहचान करना

- 'आ' प्रत्ययान्त पुल्लिंग शब्दों में 'आ' के स्थान पर 'इया' लगाने से स्त्रीलिंग बन जाते हैं; जैसे—कुत्ता-कुतिया, बूढ़ा-बुढ़िया, बछड़ा-बछिया इत्यादि।
- व्यवसायबोधक, जातिबोधक तथा उपनामवाचक शब्दों के अन्तिम स्वर का लोप करके उनमें 'इन' और 'आइन' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग बन जाता है; जैसे—धोबी-धोविन, कहार-कहारिन, माली-मालिन, बाघ-बाघिन इत्यादि।
- कतिपय उपनामवाची शब्दों में 'आनी' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है; जैसे—देवर-देवरानी, जेठ-जेठानी, खत्री-खत्रानी इत्यादि।
- संस्कृत के 'वान' और 'मान' प्रत्ययान्त विशेषण शब्दों में 'वान' तथा 'मान' को क्रमशः 'वती' और 'मती' कर देने से स्त्रीलिंग बन जाते हैं; जैसे—पुत्रवान्-पुत्रवती, श्रीमान्-श्रीमती, बुद्धिमान्-बुद्धिमती, बलवान्-बलवती, भगवान्-भगवती इत्यादि।
- संस्कृत के अकारान्त विशेषण शब्दों के अन्त में 'आ' लगा देने से स्त्रीलिंग बन जाते हैं; जैसे—प्रियतम-प्रियतमा, श्याम-श्यामा, चंचल-चंचला, आत्मज-आत्मजा, कान्त-कान्ता, सुत-सुता इत्यादि।
- जिन पुल्लिंग शब्दों के अन्त में 'अक' होता है, उनमें 'अक' के स्थान पर 'इका' लगा देने से स्त्रीलिंग बन जाते हैं; जैसे—बालक-बालिका, नायक-नायिका, पालक-पालिका, सेवक-सेविका, लेखक-लेखिका इत्यादि।
- महीनों, दिनों, ग्रहों और पर्वतों के नाम पुल्लिंग होते हैं; जैसे—चैत्र, बैसाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ ...; सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार ...; राहु, केतु, हिमालय, विन्ध्याचल इत्यादि।
- नदियों, तिथियों तथा नक्षत्रों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे—गंगा, यमुना, गोदावरी, कावेरी; द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी; अश्विनी, रोहिणी इत्यादि।
- भाषा, बोली और लिपि का नाम स्त्रीलिंग होता है; जैसे—हिन्दी, अंग्रेजी, रूसी, चीनी, अरबी, फ़ारसी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, कुमाऊँनी, गढ़वाली, देवनागरी, रोमन, कैथी, मुड़िया, खरोष्ठी, ब्राह्मी इत्यादि।
- कुछ शब्दों के लिंग निर्धारण के लिए शब्दों के साथ 'नर' या 'मादा' शब्द जोड़ देते हैं; जैसे—तोता (नर), चीता (मादा), कोयल (नर) इत्यादि।

वचन

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से एकत्व या अनेकत्व का बोध होता है, उसे वचन (Number) कहते हैं। अर्थात् वचन का सम्बन्ध विकारी शब्दों के रूप की संख्या (एक या अनेक) से है।

वचन दो प्रकार के होते हैं

1. एकवचन

शब्द के जिस रूप से एक वस्तु का बोध होता है, उसे एकवचन (Singular) कहते हैं; जैसे—नदी, लड़का, घोड़ा, कलम इत्यादि।

2. बहुवचन

शब्द के जिस रूप से अनेक वस्तुओं का बोध होता है, उसे बहुवचन (Plural) कहते हैं; जैसे—लड़के, घोड़े, कलमें, नदियाँ इत्यादि।

सामान्यतः एक संख्या के लिए एकवचन और अनेक संख्याओं के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है।

बहुवचन बनाने में प्रयुक्त प्रत्यय

- ए (आकारान्त पुल्लिंग) तद्भव संज्ञाओं के अन्त में यदि 'आ' के स्थान पर 'ए' कर दें, तो वह बहुवचन में परिवर्तित हो जाता है।

'ए' के प्रयोग से बने शब्द

| एकवचन | बहुवचन | एकवचन | बहुवचन |
|-------|--------|--------|--------|
| घोड़ा | घोड़े | कुत्ता | कुत्ते |
| लड़का | लड़के | पत्ता | पत्ते |

- एँ (अकारान्त एवं आकारान्त स्त्रीलिंग) शब्दों के अन्त में यदि एँ जोड़ दिया जाए, तो वह बहुवचन में परिवर्तित हो जाते हैं।

'एँ' के प्रयोग से बने शब्द

| एकवचन | बहुवचन | एकवचन | बहुवचन |
|--------|----------|-------|--------|
| पुस्तक | पुस्तकें | सड़क | सड़कें |
| गाय | गायें | माता | माताएँ |

- याँ यह ईकारान्त, इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में जुड़कर उन्हें बहुवचन में परिवर्तित कर देते हैं।

'याँ' के प्रयोग से बने शब्द

| एकवचन | बहुवचन | एकवचन | बहुवचन |
|-------|---------|-------|----------|
| रीति | रीतियाँ | नदी | नदियाँ |
| जाति | जातियाँ | लड़की | लड़कियाँ |

- ओं कुछ एकवचन शब्दों के अन्त में ओं लगाकर भी उन्हें बहुवचन में परिवर्तित किया जा सकता है।

'ओं' के प्रयोग से बने शब्द

| एकवचन | बहुवचन | एकवचन | बहुवचन |
|-------|--------|-------|--------|
| कथा | कथाओं | साधु | साधुओं |
| बहन | बहनों | नेता | नेताओं |

- उकारान्त/ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में 'एँ' जोड़कर बहुवचन बनाते हैं।

| एकवचन | बहुवचन | एकवचन | बहुवचन |
|-------|---------|-------|--------|
| वस्तु | वस्तुएँ | वधू | वधुएँ |

- कुछ शब्द जो हमेशा बहुवचन के लिए प्रयोग होते हैं।

| शब्द | प्रयोग | शब्द | प्रयोग |
|-----------|----------------------------|-------|---------------------|
| बाल | हमने बाल कटा दिए। | दर्शन | आपके दर्शन हुए। |
| हस्ताक्षर | तुमने हस्ताक्षर कर दिए। | होश | वे सब होश में हैं। |
| आँसू | आँखों से आँसू छलक रहे हैं। | प्राण | उनके प्राण निकल गए। |

- कुछ शब्द हमेशा एकवचन के लिए प्रयोग होते हैं।

| शब्द | प्रयोग | शब्द | प्रयोग |
|---------|----------------------|--------|---------------------|
| सामान | सामान कहाँ गया। | जनता | जनता जवाब चाहती है। |
| सामग्री | हवन सामग्री लेकर आओ। | माल | माल गायब हो गया। |
| सोना | सोना बहुत महँगा है। | पुस्तक | यह पुस्तक मेरी है। |

एकवचन के लिए बहुवचन का प्रयोग

- (i) सम्मानसूचक शब्द हमेशा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं; जैसे—
 - गाँधीजी सत्य और अहिंसा के पुजारी थे।
 - पिताजी बाजार जा रहे हैं।
 - प्रधानाचार्य जी इस सभा की अध्यक्षता करेंगे।
- (ii) अभिमान या अधिकार प्रकट करने के लिए संज्ञा, सर्वनाम इत्यादि का प्रयोग बहुवचन में होता है; जैसे—
 - हम उससे बात नहीं करेंगे।
 - हम तुम्हें कक्षा से निकाल देंगे।
- (iii) कभी-कभी कुछ शब्दों के बहुवचन रूप ही लोकव्यवहार में प्रयुक्त होते हैं; जैसे—तू एकवचन और तुम बहुवचन है, परन्तु एक व्यक्ति के लिए प्रायः तुम शब्द का ही प्रयोग किया जाता है। तू शब्द का प्रचलन नगण्य है।
- (iv) अनेकता प्रकट करने के लिए कई संज्ञा शब्दों के साथ; लोग, गण, जन, वर्ग, वृन्द, समूह, समुदाय, जाति, दल इत्यादि शब्द जोड़ दिए जाते हैं, तो उनका प्रयोग बहुवचन में हो जाता है; जैसे—तुम लोग, प्रियजन, अध्यापक वर्ग, नारिवृन्द, जनसमूह, जनसमुदाय, पुरुष जाति, क्रान्तिदल इत्यादि।

बहुवचन के लिए एकवचन का प्रयोग

जातिवाचक संज्ञाएँ कभी-कभी एकवचन में ही बहुवचन का बोध कराती हैं; जैसे—एक किलो आलू, मुम्बई का केला, एक लाख रुपये इत्यादि।

वचन सम्बन्धी महत्वपूर्ण निर्देश

‘प्रत्येक’ तथा ‘हर एक’ का प्रयोग सदा एकवचन में होता है। दूसरी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हिन्दी व्याकरण के अनुसार होना चाहिए; जैसे—अंग्रेज़ी का Foot (फुट) एकवचन तथा Feet (फीट) बहुवचन है। हिन्दी में फुट शब्द ही चलेगा।

इसी प्रकार फ़ारसी में ‘वकील’ एकवचन और ‘वकला’ बहुवचन है, लेकिन हिन्दी में ‘वकला’ शब्द नहीं चलेगा। यही बात अन्य भाषाओं के शब्दों पर लागू होगी। ऐसे शब्दों का प्रयोग हिन्दी की प्रकृति और व्याकरण के अनुसार ही होगा; जैसे—

- (i) सड़क बीस फीट चौड़ी है। (अशुद्ध)
सड़क बीस फुट चौड़ी है। (शुद्ध)
 - (ii) लखनऊ में रहीम के तीन मकानात हैं। (अशुद्ध)
लखनऊ में रहीम के तीन मकान हैं। (शुद्ध)
 - (iii) मेरे पास अनेक महत्वपूर्ण कागजात हैं। (अशुद्ध)
मेरे पास अनेक महत्वपूर्ण कागज हैं। (शुद्ध)
- भाववाचक तथा गुणवाचक संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन में होता है; जैसे—मैं आपकी सज्जनता से प्रभावित हूँ।
 - द्रव्यवाचक संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन में होता है; जैसे—उनके पास बहुत सोना है, उनका बहुत-सा धन तिजोरी में बन्द है इत्यादि।

कारक

वाक्य में जिस शब्द का सम्बन्ध क्रिया से होता है, उसे कारक (Case) कहते हैं। अन्य शब्दों में, संज्ञा अथवा सर्वनाम का किसी भी वाक्य के अन्य पदों मुख्यतः क्रिया से जो सम्बन्ध होता है, वह कारक कहलाता है; जैसे—

- अभय ने कुत्ते को डण्डे से मारा।

इस वाक्य में अभय, क्रिया (मारा) का कर्ता है, ‘कुत्ता’ क्रिया का कर्म है, ‘डण्डे से’ यह क्रिया पूर्ण की गई है। अतः ‘डण्डा’ क्रिया का साधन होने से करण

कारक है। कारक को विभक्ति या परसर्ग (बाद में जुड़ने वाले) भी कहा जाता है; ये सामान्यतः स्वतन्त्र होते हैं और संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होते हैं।

कारक के प्रकार

हिन्दी में आठ कारक माने गए हैं, जो निम्न हैं

| विभक्ति | कारण | चिह्न | अर्थ |
|----------|-----------|---------------|----------------------------|
| प्रथमा | कर्ता | ने | काम करने वाला |
| द्वितीया | कर्म | को | जिस पर काम का प्रभाव पड़े |
| तृतीया | करण | से, द्वारा | जिसके द्वारा कर्ता काम करे |
| चतुर्थी | सम्प्रदान | को, के लिए | जिसके लिए क्रिया की जाए |
| पंचमी | अपादान | से (अलग होना) | जिससे अलगाव हो |
| षष्ठी | सम्बन्ध | का, के, की | अन्य पदों से सम्बन्ध |
| सप्तमी | अधिकरण | में, पर | क्रिया का आधार |
| सम्बोधन | सम्बोधन | हे! अरे! अजी! | किसी को पुकारना, बुलाना |

1. कर्ता कारक

वाक्य में जिस शब्द द्वारा काम करने का बोध होता है, उसे कर्ता कारक (Nominative) कहते हैं; जैसे—

- राम ने श्याम को मारा।

इस वाक्य में राम कर्ता है, क्योंकि ‘मारा’ क्रिया करने वाला राम ही है। इस वाक्य में कर्ता के साथ कारक चिह्न ‘ने’ का प्रयोग हुआ है। अतः यह कर्ता कारक है। कर्ता कारक वाक्य में बिना कारक चिह्न के भी प्रयुक्त होता है; जैसे—राम छत पर चढ़ गया।

2. कर्म कारक

वाक्य में क्रिया का प्रभाव या फल जिस शब्द पर पड़ता है, उसे कर्म (क्रिया द्वारा प्रभावित) कारक (Accusative) कहते हैं; जैसे—

- राम ने श्याम को मारा।

यहाँ कर्ता राम है और उसके ‘मारने’ का फल श्याम पर पड़ता है। अतः श्याम कर्म है। यहाँ श्याम के साथ कारक चिह्न ‘को’ का प्रयोग हुआ है। अतः यह कर्म कारक है।

3. करण कारक

करण का शाब्दिक अर्थ ‘साधन’ है। संज्ञा का वह रूप जिससे किसी क्रिया के साधन का बोध हो, उसे करण (क्रिया का उपकरण) कारक (Instrumental) कहते हैं; जैसे—

- शिकारी ने शेर को बन्दूक से मारा।

इस वाक्य में बन्दूक द्वारा शेर को मारने का उल्लेख है। अतः यहाँ ‘बन्दूक’ करण कारक है। करण कारक के अन्य चिह्न ‘से’, ‘के द्वारा’, ‘के कारण’, ‘के साथ’, ‘के बिना’ इत्यादि हैं।

4. सम्प्रदान कारक

सम्प्रदान का शाब्दिक अर्थ ‘देना’ है। जब वाक्य में किसी को कुछ दिया जाए या किसी के लिए कुछ किया जाए, तो वहाँ सम्प्रदान कारक (Dative) होता है; जैसे—

- उसने विद्यार्थी को पुस्तक दी।

वाक्य में विद्यार्थी को कुछ दिया गया है इसलिए ‘विद्यार्थी’ सम्प्रदान है और इसका चिह्न ‘को’ है। अतः यहाँ सम्प्रदान कारक है।

5. अपादान कारक

अपादान का शाब्दिक अर्थ 'अलगाव' होता है। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से दूर होने, निकलने, डरने, रक्षा करने, विद्या सीखने, तुलना करने का भाव प्रकट होता है, उसे अपादान कारक (Ablative) कहते हैं; जैसे—

- मैं अल्मोड़ा से आया हूँ।

उपर्युक्त उदाहरण में कर्ता 'मैं' अल्मोड़ा से अलग हुआ है और 'से' (अलग होने का भाव) कारक चिह्न का प्रयोग हुआ है। अतः यहाँ अपादान कारक है।

6. सम्बन्ध कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी अन्य शब्द के साथ सम्बन्ध या लगाव प्रतीत हो, उसे सम्बन्ध कारक (Genitive) कहते हैं। सम्बन्ध कारक का प्रयोग हमेशा विभक्ति के साथ ही होता है। सम्बन्ध कारक का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है; जैसे—

- अनीता सुरेश की बहन है।
 - नेताजी का लड़का बदमाश है।
- उपर्युक्त उदाहरण में 'की' एवं 'का' कारक चिह्न का प्रयोग सम्बन्ध दर्शाने के लिए हुआ है। अतः यहाँ सम्बन्ध कारक है।

7. अधिकरण कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार, स्थान, समय, अवसर का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक (Locative) कहते हैं; जैसे—

- वह तीन दिन में आया।
 - छोटी-सी बात पर मत लड़ो।
- उपर्युक्त उदाहरणों में 'में', 'पर' कारक चिह्नों का प्रयोग हुआ है। अतः यहाँ अधिकरण कारक है।

8. सम्बोधन कारक

संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारने, चेतावनी देने या सम्बोधित करने का बोध होता है, उसे सम्बोधन कारक (Vocative) कहते हैं। सम्बोधन कारक की कोई विभक्ति नहीं होती है। इसे प्रकट करने के लिए हे, अरे, अजी, रे इत्यादि शब्दों का प्रयोग होता है; जैसे—

- हे राम! रक्षा करो।
- अजी, सुनते हो।

कर्म कारक और सम्प्रदान कारक में अन्तर

- दोनों कारकों में 'को' परसर्ग (कारक चिह्न) का प्रयोग होने पर भी दोनों में अन्तर है।
- वह शब्द जिस पर कर्ता द्वारा की गई क्रिया पर फल पड़ता है कर्म कारक कहलाता है; जैसे—

राम ने श्याम को बुलाया।

यहाँ 'को' परसर्ग का फल श्याम पर पड़ता है।

- सम्प्रदान कारक में देने या उपकार का भाव मुख्य होता है; जैसे—

मालिक ने नौकर को धन दिया।

यहाँ देने का प्रभाव सम्प्रदान कारक को प्रकट कर रहा है।

करण कारक और अपादान कारक में अन्तर

- करण और अपादान कारकों में 'से' कारक चिह्न का प्रयोग किया जाता है, इसके बाद भी इन दोनों में मुख्य अन्तर है। करण क्रिया का साधन या उपकरण है; जबकि अपादान से अलग होने का भाव प्रकट होता है।
- कर्ता कार्य पूर्ण करने के लिए जिस उपकरण या साधन का प्रयोग करता है, उसे करण कारक कहते हैं; जैसे—

मैं चाकू से फल काटता हूँ।

यहाँ चाकू से काटने का कार्य हुआ है। अतः चाकू शब्द का प्रयोग करण कारक में हुआ है।

- अपादान कारक में अलग होने का भाव निहित रहता है; जैसे—
रोहन गाँव से चला गया।

यहाँ अपादान कारक गाँव में माना जाएगा न कि रोहन में, क्योंकि जो अलग होता है उसमें अपादान कारक नहीं माना जाता, बल्कि जिस स्थान या वस्तु से वह अलग हुआ है, उसमें अपादान कारक माना जाता है।

मध्यान्तर प्रश्नावली

1. संज्ञा किसे कहते हैं?

- (a) स्थान के नाम को (b) वस्तु के नाम को
(c) प्राणी के नाम को (d) ये सभी

2. जातिवाचक संज्ञा शब्द है

- (a) डॉक्टर (b) कामायनी (c) सुशील (d) बचपन

3. 'मिठास' शब्द है

- (a) व्यक्तिवाचक (b) जातिवाचक (c) भाववाचक (d) समूहवाचक

4. 'महात्म्य' शब्द है

- (a) क्रिया (b) विशेषण (c) क्रिया-विशेषण (d) भाववाचक

5. निम्नलिखित विकल्पों में से किस विकल्प में सभी शब्द समूहवाचक संज्ञाएँ हैं?

- (a) सेना, कक्षा, सभा (b) अध्यापक, मिठाई, समाचार
(c) पशु, मानव, अच्छा (d) चोरी, गुरुता, साधु

6. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा से सम्बन्धित है?

- (a) आगरा (b) गरीब (c) पानी (d) बचपन

7. संज्ञा के जिस रूप से पुरुषत्व या स्त्रीत्व का बोध हो, उसे क्या कहते हैं?

- (a) वचन (b) कारक (c) लिंग (d) क्रिया

8. हिन्दी भाषा में लिंग के कितने भेद हैं?

- (a) तीन (b) दो (c) चार (d) पाँच

9. कवि का स्त्रीलिंग रूप होगा

- (a) कवित्री (b) लेखिका (c) कवीत्री (d) कवयित्री

10. छात्र ने परीक्षा उत्तीर्ण की। (रेखांकित शब्द का स्त्रीलिंग लिखिए)

- (a) छात्रों (b) छात्रा (c) छात्राएँ (d) छात्री

11. हिन्दी में वचन के कितने भेद हैं?

- (a) एक (b) तीन (c) दो (d) चार

12. किस वाक्य में वचन का सही प्रयोग हुआ है?

- (a) मेरी होश उड़ गई। (b) हमारे होश उड़ गई।
(c) मैं होश उड़ गया। (d) मेरे होश उड़ गए।

13. वाक्य में क्रिया का सम्बन्ध किससे होता है?

- (a) लिंग (b) वचन
(c) कारक (d) इनमें से कोई नहीं

14. हिन्दी में कितने कारक हैं?

- (a) दस (b) नौ (c) सात (d) आठ

15. 'राम ने श्याम को मारा।' वाक्य में कौन-सा कारक है?

- (a) कर्ता (b) कर्म (c) करण (d) अपादान

उत्तरमाला

1. (d) 2. (a) 3. (c) 4. (d) 5. (a)
6. (a) 7. (c) 8. (b) 9. (d) 10. (b)
11. (c) 12. (d) 13. (c) 14. (d) 15. (a)

सर्वनाम

सर्वनाम का शाब्दिक अर्थ सबका नाम है। संज्ञा के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'सर्वनाम' (Pronoun) कहते हैं; जैसे—

- राजीव देर से घर पहुँचा, क्योंकि उसकी ट्रेन देर से चली थी।

इस वाक्य में 'उसकी' का प्रयोग 'राजीव' के लिए हुआ है, अतः 'उसकी' शब्द सर्वनाम कहा जाएगा। हिन्दी में सर्वनामों की संख्या 11 है, जो निम्न प्रकार हैं; मैं, तू, आप, यह, वह, जो, सो, कोई, कुछ, कौन, क्या।

सर्वनाम के भेद

व्यावहारिक आधार पर सर्वनाम के निम्नलिखित छः भेद हैं

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निजवाचक सर्वनाम
3. प्रश्नवाचक सर्वनाम
4. सम्बन्धवाचक सर्वनाम
5. निश्चयवाचक सर्वनाम
6. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

1. पुरुषवाचक सर्वनाम

वह सर्वनाम जो पुरुष या स्त्री के नाम के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun) कहलाते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं;

| पुरुषवाचक सर्वनाम | परिभाषा व उदाहरण |
|-------------------|---|
| उत्तम पुरुष | जिन सर्वनामों का प्रयोग वक्ता (बोलने वाला) अपने लिए करता है, उन्हें उत्तम पुरुषवाचक (First Person) सर्वनाम कहते हैं; जैसे—मैं, मेरा, हम, मुझे, हमारी, मुझको इत्यादि। |
| मध्यम पुरुष | जिन सर्वनामों का प्रयोग श्रोता (सुनने वाले) के लिए किया जाता है, उन्हें मध्यम पुरुषवाचक (Second Person) सर्वनाम कहते हैं; जैसे—तुम, तू, आप, तुमने, आपने, तुम्हें इत्यादि। |
| अन्य पुरुष | जिन सर्वनामों का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति के लिए किया जाता है, उन्हें अन्य पुरुषवाचक (Third Person) सर्वनाम कहते हैं; जैसे—यह, वह, ये, वे, उनको, उन्हें इत्यादि। |

2. निजवाचक सर्वनाम

जिन शब्दों का प्रयोग वक्ता स्वयं के लिए करता है और जो सर्वनाम प्रथम पुरुष, द्वितीय पुरुष, तृतीय पुरुष में निजत्व (आप) का बोध कराते हैं, उन्हें निजवाचक सर्वनाम (Reflexive) कहते हैं; जैसे—

- मैं अपने आप ही आया हूँ।
- मैं अपने आप काम कर लूँगा।
- आप भला तो जग भला।

निजवाचक सर्वनाम 'आप' का प्रयोग निम्नलिखित अर्थों में होता है

- (i) निजवाचक 'आप' का प्रयोग किसी संज्ञा या सर्वनाम के अवधारण (निश्चय) के लिए होता है; जैसे—
 - मैं और आप वहीं से आए हैं।
- (ii) निजवाचक 'आप' का प्रयोग दूसरे व्यक्ति के निराकरण के लिए भी होता है; जैसे—
 - उन्होंने मुझे रहने को कहा और आप चलते बने।
- (iii) सर्वसाधारण के अर्थ में भी 'आप' का प्रयोग होता है; जैसे—
 - अपने से बड़ों की आज्ञा का पालन करना चाहिए।
- (iv) अवधारण के अर्थ में कभी-कभी 'आप' के साथ 'ही' जोड़ा जाता है; जैसे—
 - 'मैं' यह काम 'आप ही' कर लूँगा।

3. प्रश्नवाचक सर्वनाम

प्रश्न पूछने के लिए जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun) कहते हैं; जैसे—कौन, क्या, कहाँ।

- कौन शोर कर रहा है?
- उसे क्या हो गया है?
- तुम कहाँ रहते हो?

4. सम्बन्धवाचक सर्वनाम

वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम के साथ सम्बन्ध प्रदर्शित करने के लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है; उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun) कहते हैं; जैसे—उसकी, जिसकी, जो, सो।

- जिसकी लाठी उसकी भैंस।
- जो देता है सो लेता है।
- जो कहा गया वही करो।

5. निश्चयवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु (निकट अथवा दूर) का बोध होता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun) या संकेतवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—यह, वह, ये, वे।

- यह उपयोगी साधन है।
- ये भ्रष्टाचार के प्रबल विरोधी हैं।
- वह बहुत सुन्दर है।
- वे अच्छे लोग नहीं हैं।

6. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो, उन्हें अनिश्चयवाचक (Indefinite Pronoun) सर्वनाम कहते हैं; जैसे—कोई, कुछ।

- कोई आ रहा है।
- वह कुछ लाया था।

सर्वनामों में अन्तर

पुरुषवाचक सर्वनाम और निश्चयवाचक सर्वनाम में अन्तर

पुरुषवाचक सर्वनाम में वक्ता अर्थात् बोलने वाला व्यक्ति जिन शब्दों का प्रयोग स्वयं के लिए करता हो अथवा दूसरों को सम्बोधित करने के लिए करता हो या किसी तीसरे अन्य व्यक्ति के विषय में संकेत करते हुए उन शब्दों का प्रयोग करता हो, तो वहाँ पुरुषवाचक सर्वनाम होता है; जैसे—

- मैं आज घूमने जाऊँगा।
यहाँ वक्ता 'मैं' का प्रयोग स्वयं के लिए प्रयोग कर रहा है अर्थात् उत्तम पुरुष।
- तुम कहाँ जा रहे हो?
यहाँ वक्ता 'तुम' का प्रयोग सामने वाले व्यक्ति के लिए कर रहा है, अर्थात् मध्यम पुरुष।
- वह आज मेरे घर आएगा।
यहाँ वक्ता 'वह' का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति के लिए कर रहा है अर्थात् अन्य पुरुष।
- निश्चयवाचक सर्वनाम किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करते हैं; जैसे—वह घर की ओर जा रहा है।

पुरुषवाचक सर्वनाम और निजवाचक सर्वनाम में अन्तर

पुरुषवाचक सर्वनाम के उदाहरण

- आप आजकल क्या कर रहे हैं? (आप-मध्यम पुरुष)
- आप बड़े धैर्यवान हैं। (आप-अन्य पुरुष)

निजवाचक सर्वनाम के उदाहरण

- मैं अपने आप खा लूँगा। (आप-प्रथम पुरुष)
- वह आप ही चला जाएगा। (आप-अन्य पुरुष)

सर्वनाम के प्रयोग सम्बन्धी निर्देश

- स्त्रीलिंग और पुल्लिंग के आधार पर सर्वनाम में परिवर्तन नहीं होता; जैसे—‘यह’, ‘वह’, ‘मैं’, ‘तुम’ इत्यादि स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दोनों में समान रहते हैं; जैसे—
 - वह खाती है।
- वचन और कारक के आधार पर सर्वनामों में रूपान्तर होता है; जैसे—मैं-हम, तू-तुम, मेरा-हमारा; आप-आपने, आपसे, आपको, आपके लिए इत्यादि।
- सर्वनाम जिस संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होता है, उसी के अनुसार लिंग और वचन चलते हैं।
- उत्तम पुरुष सम्बन्ध कारक के चिह्न ‘का’, ‘की’, ‘के’ क्रमशः ‘रा’, ‘रे’ के रूप में बदल जाते हैं।
- ‘मैं’, ‘तू’, ‘यह’, ‘वह’ विभक्ति रहित सर्वनाम कर्ता कारक के बहुवचन में क्रमशः ‘हम’, ‘तुम’, ‘ये’, ‘वे’ के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं।

विशेषण

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण (Adjective) कहते हैं। विशेषण जिसकी विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं। विशेषणों की विशेषता बताने वाले शब्द प्रविशेषण कहलाते हैं; जैसे—

- राम बहुत तेज दौड़ता है।

दिए गए उदाहरण में राम संज्ञा शब्द है, जिसकी विशेषता तेज दौड़ने से है। अतः यहाँ तेज विशेषण है। विशेषण (तेज), राम की विशेषता बता रहा है। अतः राम विशेष्य है। यहाँ ‘बहुत’ शब्द विशेषण ‘तेज’ की विशेषता बता रहा है। अतः यह प्रविशेषण है। विशेषण के चार प्रमुख भेद हैं

1. गुणवाचक विशेषण

जिन शब्दों द्वारा संज्ञा के गुण अथवा दोष का बोध होता है, उन्हें ‘गुणवाचक विशेषण’ (Adjective of Quality) कहते हैं। गुणवाचक विशेषण के प्रमुख रूप निम्नलिखित हैं

- भाव शूरी, कायर, बलवान, दयालु, निर्दयी, अच्छा, बुरा इत्यादि।
- काल अगला, पिछला, नया, पुराना इत्यादि।
- स्थान ग्रामीण, शहरी, मैदानी, पहाड़ी, पंजाबी, बिहारी इत्यादि।
- आकार टेढ़ा-मेढ़ा, सुन्दर, भद्दा, लम्बा, ऊँचा, नीचा, चौड़ा इत्यादि।
- समय प्रातःकालीन, मासिक, त्रैमासिक, साप्ताहिक, दैनिक इत्यादि।
- दशा स्वस्थ, अस्वस्थ, रोगी, निरोग, दुबला, कमजोर, बलिष्ठ इत्यादि।
- रंग लाल, हरा, पीला, नीला, काला, सफेद, बैंगनी, नारंगी इत्यादि।

2. परिमाणवाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों द्वारा संज्ञा की मात्रा (नाप-तौल) का बोध होता है, उन्हें ‘परिमाणवाचक विशेषण’ (Adjective of Quantity) कहते हैं। परिमाणवाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं

- निश्चित परिमाणवाचक** जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा की निश्चित मात्रा का बोध होता है, उन्हें ‘निश्चित परिमाणवाचक’ (Quantity) विशेषण कहते हैं; जैसे—एक लीटर दूध, दस मीटर कपड़ा, एक किलो आलू इत्यादि।
- अनिश्चित परिमाणवाचक** जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा की अनिश्चित मात्रा का बोध होता है, उन्हें ‘अनिश्चित परिमाणवाचक’ विशेषण कहते हैं; जैसे—थोड़ा दूध, कुछ शहद, बहुत पानी, अधिक पैसा इत्यादि।

3. संख्यावाचक विशेषण

जिन विशेषण शब्दों से संज्ञा की संख्या का बोध होता है, उन्हें संख्यावाचक विशेषण (Adjective of Number) कहते हैं; जैसे—एक मेज, चार कुर्सियाँ, दस पुस्तकें, कुछ रुपए इत्यादि।

संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं

- निश्चित संख्यावाचक** जिन विशेषण शब्दों से निश्चित संख्या का बोध होता है, उन्हें ‘निश्चित संख्यावाचक’ विशेषण कहते हैं; जैसे—एक, दूसरा, तीसरा, दोनों, तीनों, प्रति, प्रत्येक, हर-एक, एक-एक इत्यादि।

| विशेषण | उदाहरण |
|---------------|---------------------------------------|
| पूर्णांकवाचक | एक, दो, चार, आठ, दस इत्यादि। |
| अपूर्णांकवाचक | आधा, सवा, डेढ़, पौना, ढाई इत्यादि। |
| कर्मवाचक | दूसरा, पाँचवाँ, आठवाँ, दसवाँ इत्यादि। |
| आवृत्तिवाचक | दोगुना, तिगुना, सौगुना इत्यादि। |
| समुदायवाचक | दोनों, तीनों, पाँचों, सातों इत्यादि। |
| विभागबोधक | एक-एक, दस-दस घोड़े, प्रत्येक इत्यादि। |

- अनिश्चित संख्यावाचक** जिन विशेषण शब्दों से अनिश्चित संख्या का बोध होता है, उन्हें ‘अनिश्चित संख्यावाचक’ विशेषण कहते हैं; जैसे—थोड़े आदमी, कुछ रुपए इत्यादि।

4. सार्वनामिक विशेषण

जो सर्वनाम शब्द संज्ञा के लिए विशेषण का काम करते हैं, उन्हें ‘सार्वनामिक विशेषण’ (Demonstrative Adjective) कहते हैं। ‘यह’, ‘वह’, ‘जो’, ‘कौन’, ‘क्या’, ‘कोई’, ‘ऐसा’, ‘ऐसी’, ‘वैसा’, ‘वैसी’ इत्यादि ऐसे सर्वनाम हैं, जो संज्ञा शब्दों के पहले प्रयुक्त होकर विशेषण का कार्य करते हैं, इसलिए इन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं; जैसे—

- वह लड़का बदमाश है।
- इस परीक्षार्थी ने नकल की है।

| सार्वनामिक विशेषण | उदाहरण |
|-------------------------------|-----------------|
| निश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण | यह, वह, ये, वे। |
| अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण | कोई, कुछ। |
| सम्बन्धवाचक सार्वनामिक विशेषण | जो, सो। |
| प्रश्नवाचक सार्वनामिक विशेषण | कौन, क्या। |

जब ये सर्वनाम अकेले प्रयुक्त होते हैं, तो वे केवल सर्वनाम होते हैं; जैसे—

- वह घर चला गया।

विशेषण की तुलनावस्था

विशेषण संज्ञा शब्दों की विशेषता बताते हैं। यह विशेषता किसी में सामान्य, किसी में कुछ अधिक और किसी में सबसे अधिक होती है। विशेषणों के इसी उतार-चढ़ाव को तुलना कहा जाता है। इस प्रकार, दो या दो-से-अधिक वस्तुओं या भावों के गुण, मान इत्यादि के मिलान या तुलना करने वाले विशेषण को तुलनात्मक विशेषण कहते हैं। हिन्दी में तुलनात्मक विशेषण की तीन अवस्थाएँ हैं

- मूलावस्था (Positive Degree)
- उत्तरावस्था (Comparative Degree)
- उत्तमावस्था (Superlative Degree)

तुलनात्मक विशेषण की दृष्टि से विशेषणों की अवस्थाएँ

| मूलावस्था | उत्तरावस्था | उत्तमावस्था |
|-----------|-------------|-------------|
| अधिक | अधिकतर | अधिकतम |
| उच्च | उच्चतर | उच्चतम |
| कोमल | कोमलतर | कोमलतम |
| गुरु | गुरुतर | गुरुतम |
| निकट | निकटतर | निकटतम |
| निम्न | निम्नतर | निम्नतम |
| बृहत् | बृहत्तर | बृहत्तम |
| महत् | महत्तर | महत्तम |
| सुन्दर | सुन्दरतर | सुन्दरतम |
| लघु | लघुतर | लघुतम |

विशेषण सम्बन्धी महत्वपूर्ण निर्देश

विशेषण का प्रयोग करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए

- हिन्दी में विशेषण शब्दों के आगे विभक्ति चिह्न नहीं लगते; जैसे—वीर मनुष्य, अच्छे घर का।
- विशेषण के लिंग, वचन और कारक वही होते हैं, जो विशेष्य के; जैसे—अच्छे विद्यार्थी, अच्छा विद्यार्थी। आकारान्त विशेषण स्त्रीलिंग में ईकारान्त हो जाते हैं; जैसे—काला घोड़ा, काली घोड़ी, अच्छा लड़का, अच्छी लड़की इत्यादि।
- पुल्लिंग आकारान्त विशेषण का अन्तिम 'आ' कर्ता कारक, एकवचन को छोड़कर अन्य सब कारकों में 'ए' हो जाता है; जैसे—अच्छे लड़के को।
- संस्कृत विशेषणों के रूप हिन्दी में विशेष्य के लिंग के अनुसार कभी नहीं बदलते और कभी बदल जाते हैं; जैसे—सुन्दर काया, सुशील लड़की इत्यादि।
- ऐसे विशेषण जो विशेष्य से ठीक पहले आते हैं, उन्हें उद्देश्य विशेषण कहते हैं। वे विशेषण जो विशेष्य के ठीक बाद आते हैं, उन्हें विधेय विशेषण कहते हैं।

क्रिया

- जिन शब्दों से किसी कार्य का होना या करना समझा जाए, उन्हें 'क्रिया' (Verb) कहते हैं; जैसे—पढ़ना, खाना, लिखना, चलना, दौड़ना, हँसना इत्यादि।
- हिन्दी में क्रिया के रूप लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार बदलते हैं।
- क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। धातु के आगे ना जोड़ने से क्रिया का सामान्य रूप बन जाता है; जैसे—
पढ़ धातु में ना जोड़ने से पढ़ना बन जाता है, इसी प्रकार लिख + ना = लिखना; चल + ना = चलना इत्यादि।
- धातु के दो रूप होते हैं
 - मूल धातु** को स्वतन्त्र धातु भी कहते हैं, क्योंकि यह अन्य किसी शब्द पर निर्भर नहीं होती है; जैसे—हस, खा, पी इत्यादि।
 - यौगिक धातु** को संयुक्त धातु भी कहते हैं, क्योंकि यह एक या दो धातुओं द्वारा अथवा संज्ञा, विशेषण में प्रत्यय लगाने से बनती है।

प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेद

कर्म के अनुसार क्रिया के मुख्य रूप से दो भेद हैं

1. सकर्मक क्रिया

जिन क्रियाओं के कार्य का फल (प्रभाव) कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़ता है उन्हें 'सकर्मक क्रिया' कहते हैं; जैसे—

- अध्यापक ने लड़के को पीटा।

इस वाक्य में अध्यापक (कर्ता) द्वारा 'पीटने' के कार्य का फल लड़के (कर्म) पर पड़ा। अतः इस वाक्य में सकर्मक क्रिया है।

सकर्मक क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं

(i) एककर्मक सकर्मक क्रिया

ऐसी क्रियाएँ जिनका एक ही कर्म हो एककर्मक सकर्मक क्रिया कहलाती हैं; जैसे—

- राजन आम खाता है।
- सीमा दूध पीती है।

इन वाक्यों में आम और दूध कर्म हैं।

(ii) द्विकर्मक सकर्मक क्रिया

द्विकर्मक का अर्थ होता है—दो कर्म वाला या दो कर्म सहित। जिस क्रिया के साथ दो कर्मों के पूर्ण होने का पता चलता है उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। इसमें हमेशा पहला क्रम प्राणीवाचक तथा दूसरा क्रम निर्जीव होता है; जैसे—

- सोहन ने गुरुजी को प्रणाम किया। (दो क्रम—गुरुजी, प्रणाम)
- श्याम अपने भाई के साथ टीवी देख रहा है। (दो क्रम—भाई, टीवी)
- राहुल ने गौरव को चाय पिलाई। (दो क्रम—गौरव, चाय)

अपूर्ण सकर्मक क्रिया

- जिस सकर्मक क्रिया का पूरा आशय स्पष्ट करने के लिए वाक्य में कर्म के साथ अन्य संज्ञा या विशेषण का प्रयोग पूर्ति के रूप में होता है, उसे अपूर्ण सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे—राजा ने गंगाधर को मन्त्री बनाया।
- वाक्य में 'बनाया' सकर्मक क्रिया का कर्म 'गंगाधर' है, किन्तु इतने मात्र से इस कर्म का आशय स्पष्ट नहीं होता। उसका आशय स्पष्ट करने के लिए उसके साथ 'मन्त्री', संज्ञा भी प्रयुक्त होती है। इस वाक्य में 'बनाया' अपूर्ण सकर्मक है, 'गंगाधर' कर्म है और 'मन्त्री' शब्द कर्म-पूर्ति है।

2. अकर्मक क्रिया

जिन क्रियाओं के कार्य का फल कर्ता में ही रहता है, उन्हें 'अकर्मक क्रिया' कहते हैं; जैसे—

- विद्यार्थी पढ़ता है।

इस वाक्य में 'पढ़ना' क्रिया का फल विद्यार्थी (कर्ता) पर पड़ता है। अतः इस वाक्य में अकर्मक क्रिया है। जिन धातुओं का प्रयोग अकर्मक और सकर्मक दोनों रूपों में होता है, उन्हें उभयविध धातु कहते हैं।

अपूर्ण अकर्मक क्रिया

- जिस क्रिया से पूर्ण अर्थ का बोध कराने के लिए कर्ता के अतिरिक्त अन्य व्याकरणिक इकाइयों; जैसे—संज्ञा या विशेषण की आवश्यकता पड़ती है, उसे अपूर्ण अकर्मक क्रिया कहते हैं। अपूर्ण अकर्मक क्रिया का अर्थ पूर्ण करने के लिए जो संज्ञा या विशेषण जोड़ा जाता है, उसे पूर्ति कहते हैं; जैसे—वह मनुष्य बुद्धिमान है।
- वाक्य में 'वह मनुष्य है' से अभीष्ट अर्थ स्पष्ट नहीं होता है। अभीष्ट अर्थ जानने के लिए यदि पूछा जाए, वह मनुष्य क्या है, तो उत्तर मिलेगा बुद्धिमान। इस प्रकार प्रयुक्त वाक्य 'मनुष्य' अपूर्ण अकर्मक क्रिया है तथा 'बुद्धिमान' पूर्ति है।

व्युत्पत्ति/रचना के आधार पर क्रिया के भेद

व्युत्पत्ति/रचना के अनुसार क्रिया के दो भेद हैं

1. मूल (रूढ़) क्रिया

जो क्रिया मूल धातु से बनती है, उसे मूल (रूढ़) क्रिया कहते हैं; जैसे—लिखना, हँसना, रोना इत्यादि ये सभी क्रियाएँ लिख, हँस, रो इत्यादि मूल धातुओं से बनी हैं।

2. यौगिक क्रिया

यौगिक का शाब्दिक अर्थ है—अनेक तत्त्वों के योग से बनी। यह मूल क्रिया में प्रत्यय लगाकर, कई क्रियाओं को संयुक्त करके अथवा संज्ञा और विशेषण में प्रत्यय लगाकर बनाई जाती है; जैसे—बताना (नामधातु क्रिया), हँसाना (नामधातु क्रिया), पढ़ाना (प्रेरणार्थक क्रिया) इत्यादि। यौगिक क्रिया के निम्न भेद होते हैं

- (i) नामधातु क्रिया
- (ii) प्रेरणार्थक क्रिया
- (iii) पूर्णकालिक क्रिया
- (iv) संयुक्त क्रिया
- (v) अनुकरणात्मक क्रिया।

(i) नामधातु क्रिया

ऐसी धातु जिनका निर्माण संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण से होता है, उन्हें 'नामधातु क्रिया' कहते हैं; जैसे—

- **संज्ञा से** बात से बतियाना, हाथ से हथियाना, दुःख से दुःखाना, लाज से लजाना।
- **विशेषण से** गर्म से गरमाना, चिकना से चिकनाना।

कुछ नामधातुओं के उदाहरण इस प्रकार हैं

संज्ञा नामधातु

| संज्ञा | नामधातु | नामधातु क्रिया |
|--------|---------|----------------|
| शर्म | शर्मा | शर्माना |
| लोभ | लुभा | लुभाना |
| माटी | मटिया | मटियाना |
| बात | बतिया | बतियाना |
| झूठ | झूठ | झूठलाना |

सर्वनाम नामधातु

| सर्वनाम | नामधातु | नामधातु क्रिया |
|---------|---------|----------------|
| अपना | अपना | अपनाना |

विशेषण नामधातु

| विशेषण | नामधातु | नामधातु क्रिया |
|--------|---------|----------------|
| लज्जा | लजा | लजाना |
| चिकना | चिकना | चिकनाना |
| लालच | लालच | ललचाना |
| फिल्म | फिल्मी | फिल्माना |

(ii) प्रेरणार्थक क्रिया

जिन क्रियाओं से यह बोध होता है कि कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, उन्हें 'प्रेरणार्थक क्रिया' कहते हैं; जैसे—

- **रोहन राधा से खाना पकवाता है।**

यहाँ पहला कर्ता रोहन तथा दूसरा कर्ता राधा है। इस उदाहरण में राधा खाना पका तो रही है, लेकिन उसे कार्य करने की प्रेरणा रोहन से मिल रही है। जो कर्ता दूसरे कर्ता को प्रेरित करता है, उसे **प्रेरक कर्ता** एवं जिसको प्रेरित किया जाता है, उसे **प्रेरित कर्ता** कहते हैं। उपर्युक्त उदाहरण में रोहन प्रेरक कर्ता तथा राधा प्रेरित कर्ता है।

प्रेरणार्थक क्रिया बनाने के प्रमुख नियम इस प्रकार हैं

- मूल द्वि-अक्षरी धातुओं में 'आना' तथा 'वाना' जोड़ने से प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनती हैं; जैसे—
पढ़ (पढ़ना)—पढ़ाना-पढ़वाना, चल (चलना)—चलाना-चलवाना इत्यादि।

- द्वि-अक्षरी धातुओं में 'ऐ' या 'ओ' को छोड़कर दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है; जैसे—

जीत (जीतना)—जिताना, जितवाना,
लेट (लेटना)—लिटाना, लिटवाना इत्यादि।

- तीन अक्षर वाली धातुओं में भी 'आना' और 'वाना' जोड़कर प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनाई जाती हैं लेकिन ऐसी धातुओं से बनी प्रेरणार्थक क्रियाओं के दूसरे 'अ' अनुच्चरित रहते हैं; जैसे—

समझ (समझना), समझाना, समझवाना।
बदल (बदलना)—बदलाना, बदलवाना इत्यादि।

- 'खा', 'आ', 'जा' इत्यादि एकाक्षरी आकारान्त 'जी', 'पी', 'सी' इत्यादि ईकारान्त, 'चू', 'छू-ये' दो ऊकारान्त; 'खे' 'दे', 'ले' और 'से'-चार एकारान्त: 'खो', 'हो', 'धो', 'बी', 'ढो', 'रो' तथा 'सो'-इन ओकारान्त धातुओं में 'लाना', 'लवाना', 'वाना' इत्यादि प्रत्यय आवश्यकतानुसार लगाए जाते हैं; जैसे—

जी (जीना)—जिलाना, जिलवाना।
पी (पीना)—पिलाना, पिलवाना।

(iii) पूर्णकालिक क्रिया

पूर्णकालिक क्रिया की मुख्य पहचान यह होती है कि इसमें दो क्रियाएँ होती हैं, एक क्रिया पहले (पूर्व) होती है और दूसरी क्रिया बाद (अन्त) में होती है। जो क्रिया पूर्व में होती है, उसे **समाधिक क्रिया** कहते हैं। पूर्णकालिक क्रिया की मुख्य पहचान है कि इसमें क्रिया में कर, करके, ते, ही इत्यादि शब्द जुड़े होते हैं; जैसे—

- राम के दादाजी खाना खाकर घूमने गए।
- सीता चारपाई पर जाते ही सो गई।

(iv) संयुक्त क्रिया

दो या दो-से-अधिक क्रियाओं के योग से जो पूर्ण क्रिया बनती है, उसे 'संयुक्त क्रिया' कहते हैं; जैसे—

- राम खाना खा चुका।

इस वाक्य में 'खाना' और 'चुका' दो क्रियाओं के योग से पूर्ण क्रिया बनी है। अतः यहाँ संयुक्त क्रिया है।

संयुक्त क्रियाएँ अभ्यास, अनिष्टता, अनुमति, अवकाश, आरम्भ, आवश्यकता, इच्छा, निरन्तर, समाप्ति इत्यादि अर्थों में प्रयुक्त होती हैं।

(v) अनुकरणात्मक क्रियाएँ

किसी वास्तविक या कल्पित ध्वनि के अनुकरण से बनने वाली क्रियाओं को अनुकरणात्मक क्रियाएँ कहते हैं; जैसे—खटखट से खटखटाना, भनभन से भनभनाना, थपथप से थपथपाना तथा झनझन से झनझनाना।

अर्थ की दृष्टि से क्रिया के भेद

अर्थ की दृष्टि से क्रिया के निम्नलिखित भेद हैं

1. **आरम्भबोधक संयुक्त क्रिया** जिन संयुक्त क्रियाओं से हमें पता चले की क्रिया आरम्भ होने वाली है, उसे आरम्भबोधक संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे—
 - वह नाचने लगी।
 - मेरे घर से निकलते ही बरसात होने लगी।
 - राम खेलने लगा।

2. **समाप्तिबोधक संयुक्त क्रिया** जिन संयुक्त क्रियाओं से मुख्य क्रिया के समापन का पता चले, उसे समाप्तिबोधक संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे—
 - वह **सो चुका** है।
 - राम **खा चुका** है।
 - राम ने **पुस्तक पढ़ ली**।
3. **अवकाशबोधक संयुक्त क्रिया** जिन संयुक्त क्रियाओं से किसी क्रिया को निष्पन्न करने के लिए अवकाश का बोध कराया जाए, उसे अवकाशबोधक संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे—
 - वह बहुत **मुश्किल से सो पाया** है।
4. **अनुमतिबोधक संयुक्त क्रिया** जिन संयुक्त क्रियाओं से किसी क्रिया को करने की अनुमति दिए जाने का पता चले, उसे अनुमतिबोधक संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे—
 - मुझे **सोने दो**।
 - मुझे **कहने दो**।
5. **नित्यताबोधक संयुक्त क्रिया** जिन संयुक्त क्रियाओं से किसी क्रिया की नित्यता का या उसके समाप्त न होने का पता चले, उसे नित्यताबोधक संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे—
 - नदी **बह रही** है।
 - पेड़ **बढ़ता** गया।
6. **आवश्यकताबोधक संयुक्त क्रिया** जिन संयुक्त क्रियाओं से किसी क्रिया की आवश्यकता का या कर्तव्य का पता चले, उसे आवश्यकताबोधक संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे—
 - मुझे यह काम करना पड़ता है, तुम्हें यह काम **करना चाहिए**।
7. **निश्चयबोधक संयुक्त क्रिया** जिन संयुक्त क्रियाओं से मुख्य क्रिया के व्यवहार की निश्चयता का पता चले, उसे निश्चयबोधक संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे—
 - वह बीच में ही बोल उठा—मैं मार बैटूँगा।
8. **इच्छाबोधक संयुक्त क्रिया** जिन संयुक्त क्रियाओं से क्रिया के करने की इच्छा का पता चले, उसे इच्छाबोधक संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे—
 - वह **घर आना चाहता** है।
9. **अभ्यासबोधक संयुक्त क्रिया** जिन संयुक्त क्रियाओं से क्रिया को करने के अभ्यास का पता चले, उसे अभ्यासबोधक संयुक्त क्रिया कहते हैं। जब सामान्य भूतकाल की क्रियाओं में 'करना' क्रिया लगा दी जाती है तब अभ्यासबोधक संयुक्त क्रिया बनती है; जैसे—
 - वह **हमेशा पढ़ा करता** है।
 - राधा रात्रि में **हमेशा डायरी लिखा करती** है।
10. **शक्तिबोधक संयुक्त क्रिया** जिन संयुक्त क्रियाओं से क्रिया को करने के लिए शक्ति का पता चलता है, उसे शक्तिबोधक क्रिया कहते हैं; जैसे—
 - मैं **लिख सकता** हूँ।
 - मैं **पढ़ सकता** हूँ।
11. **पुनरुक्त संयुक्त क्रिया** जब दो समान ध्वनि वाली क्रियाओं के जुड़ने का पता चलता है उसे पुनरुक्त संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे—
 - वह **खेला-कूदा करता** है।

क्रियाओं के अन्य भेद

क्रियाओं के अन्य (Secondary) भेद निम्नलिखित हैं

| क्रिया के भेद | उदाहरण |
|--------------------------|---|
| सहायक क्रिया | सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के साथ प्रयुक्त होकर अर्थ को स्पष्ट एवं पूर्ण करने में सहायक होती है; जैसे— • मैं घर जाता हूँ। इस वाक्य में 'जाना' मुख्य क्रिया है और 'हूँ' सहायक क्रिया है। |
| क्रियार्थक क्रिया | क्रिया के इस रूप से भविष्य में होने वाले व्यापार का बोध होता है, किन्तु इसका प्रयोग मुख्य क्रिया के पहले होता है, इसलिए इसे क्रियार्थक क्रिया कहते हैं। यह पूर्वकालिक क्रिया के ठीक विपरीत है; जैसे— • वह खेलने मैदान गया। • वह पढ़ने विद्यालय गया। इन उदाहरणों में 'खेलने' तथा 'पढ़ने' क्रियार्थक क्रियाएँ हैं। |

वाच्य

क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि किसी वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव में किसी एक की प्रधानता है, उसे वाच्य (Voice) कहते हैं। वाच्य तीन प्रकार के होते हैं

1. कर्तृवाच्य

क्रिया के जिस रूप में कर्ता की प्रधानता रहती है और क्रिया का सीधा तथा प्रधान सम्बन्ध कर्ता से होता है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। इस वाच्य में क्रिया के लिंग और वचन कर्ता के अनुसार होते हैं; जैसे—

- राम पत्र **लिखता** है।
- रीता पत्र **लिखती** है।
- लड़के पत्र **लिखते** हैं।

इन वाक्यों में कर्ता की प्रधानता है तथा क्रिया के लिंग और वचन कर्ता के अनुसार हैं। कर्तृवाच्य में सकर्मक क्रिया के भी वाक्य होते हैं और अकर्मक क्रिया के भी; जैसे—

- **सकर्मक कर्तृवाच्य**—गोपाल पुस्तक पढ़ता है।
- **अकर्मक कर्तृवाच्य**—बालक सोता है।

2. कर्मवाच्य

क्रिया के जिस रूप में कर्म की प्रधानता होती है और क्रिया का सीधा सम्बन्ध कर्म से होता है, उसे कर्मवाच्य कहते हैं। इस वाच्य में क्रिया के लिंग और वचन कर्म के अनुसार होते हैं; जैसे—

- राम से पत्र **लिखा जाता** है।
 - श्याम से गाना **गाया जाता** है।
- इस वाक्य में 'लिखा जाता है' क्रिया का सीधा सम्बन्ध 'पत्र' (कर्म) से है। अतः यह वाक्य कर्मवाच्य है। इस वाच्य में सकर्मक क्रिया के ही वाक्य होते हैं, अकर्मक क्रिया के नहीं।

3. भाववाच्य

क्रिया के जिस रूप में भाव की प्रधानता होती है और क्रिया का सीधा सम्बन्ध भाव से होता है, उसे 'भाववाच्य' कहते हैं। यह केवल अकर्मक क्रिया के ही वाक्यों में प्रयुक्त होता है; जैसे—

- सोहन से **गाया नहीं जाता**।
- राधा से **बैठा नहीं जाता**।

इन वाक्यों में भाव की ही प्रधानता है। अतः ये वाक्य भाववाच्य हैं।

कर्मवाच्य और भाववाच्य में अन्तर

| कर्मवाच्य | भाववाच्य |
|--|--|
| कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है इसलिए इसमें कर्म अवश्य होता है। | भाववाच्य में कर्म नहीं होता है, क्योंकि उसमें भाव प्रमुख होता है। |
| इसमें 'जा' क्रिया का प्रयोग वैकल्पिक रूप में होता है; जैसे- 'रमेश के द्वारा दरवाजा खोला गया' | इसमें 'जा' का प्रयोग अनिवार्य रूप से होता है; जैसे- 'साधना से पढ़ा नहीं जाता'। |
| इस वाच्य में सदैव सकर्मक क्रिया के ही वाक्य होते हैं। | इस वाच्य में केवल अकर्मक क्रिया के ही वाक्य प्रयुक्त होते हैं। |
| इसमें 'नहीं' शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता है। | इसमें अधिकतर 'नहीं' शब्द का प्रयोग किया जाता है। |

वाच्य परिवर्तन

1. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में रूपान्तरण करने के लिए निम्नलिखित परिवर्तन करने होते हैं

- कर्तृवाच्य के मुख्य कर्ता के साथ 'से'/'द्वारा' विभक्ति जोड़कर उसे करण-कारक बना दिया जाता है; जैसे—राधा-राधा से, सचिन-सचिन से, मैंने-मुझसे या मेरे द्वारा, मित्र-मित्र द्वारा इत्यादि।
- क्रिया का प्रयोग कर्म के लिंग पुरुष और वचन के अनुसार करके 'जा' धातु को उचित रूप देकर जोड़ देते हैं।
- इसमें साधारण क्रिया को संयुक्त में बदला जाता है।
- कर्म के साथ कोई परसर्ग हो तो उसे हटा दिया जाता है।
- कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल में परिवर्तित किया जाता है; जैसे—

| कर्तृवाच्य | कर्मवाच्य |
|------------------------------|--------------------------------------|
| अब आप गाना गाएँ। | अब आपके द्वारा गाना गाया जाए। |
| दादाजी अखबार पढ़ते हैं। | दादाजी द्वारा अखबार पढ़ा गया। |
| माँ ने खाना पका लिया है। | माँ द्वारा खाना पका लिया जाता है। |
| छात्र पाठ याद करते हैं। | छात्रों द्वारा पाठ याद किया जाता है। |
| मजदूरों ने सड़क बना दिया है। | मजदूरों द्वारा सड़क बना दी गई। |
| चलो, खाना खाते हैं। | चलो खाना खाया जाए। |

2. कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में रूपान्तरण करने के लिए निम्नलिखित परिवर्तन करने होते हैं

- कर्तृवाच्य के मुख्य कर्ता के साथ 'से'/'द्वारा' विभक्ति जोड़कर उसे करण-कारण बना दिया जाता है; जैसे—मोहन-मोहन से, नीलिमा-नीलिमा से, मैंने-मुझसे या मेरे द्वारा आदि।
- मुख्य क्रिया को सामान्य क्रिया एवं अन्य पुरुष पुल्लिङ्ग एकवचन में स्वतन्त्र रूप में रखा जाता है।
- कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया को भाववाच्य में सामान्य भूतकाल में बदलकर 'जाना' क्रिया का रूप काल के अनुरूप प्रयोग करते हैं।

| कर्तृवाच्य | भाववाच्य |
|---------------------------------|--|
| पक्षी रात में सोते हैं। | पक्षियों से रात में सोया जाता है। |
| गर्मियों में लोग खूब नहाते हैं। | गर्मियों में लोगों से खूब नहाया जाता है। |
| बच्चे शान्त नहीं रह सकते। | बच्चों से शान्त नहीं रहा जाता। |
| हम नहीं हँस सकते। | हमसे हँसा नहीं जाता। |
| चलो, अब सोते हैं। | चलो, अब सोया जाए। |
| अब चलते हैं। | अब चला जाय। |

3. कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य बनाना

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में रूपान्तरण करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए

- कर्ता के अपने चिह्न (ने) आवश्यकतानुसार लगाने चाहिए।
- यदि वाक्य की क्रिया वर्तमान एवं भविष्यत् की है तो कर्तानुसार क्रिया की रूप रचना रखनी चाहिए।
- भूतकाल की सकर्मक क्रिया रहने पर कर्म के लिंग, वचन के अनुसार क्रिया को रखना चाहिए; जैसे—

| कर्मवाच्य | कर्तृवाच्य |
|--|--|
| मुझसे यह दृश्य नहीं देखा गया। | मैं यह दृश्य नहीं देख सका। |
| मजदूरों से पत्थर नहीं तोड़े जा रहे। | मजदूर पत्थर नहीं तोड़ रहे। |
| लड़कियों द्वारा गीत गाए जा रहे हैं। | लड़कियाँ गीत गा रही हैं। |
| मुझसे अखबार पढ़ा नहीं जाता। | मैं अखबार नहीं पढ़ सकता। |
| किसान द्वारा खेत में खाद डाली जाती है। | किसान खेत में खाद डालते हैं। |
| छात्रों को प्रार्थना स्थल पर इकट्ठा किया | छात्रों को प्रार्थना स्थल पर इकट्ठा कीजिए। |

वाच्य के प्रयोग

क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन कहीं कर्ता के अनुसार होते हैं, कहीं कर्म के अनुसार और कहीं क्रिया के अनुसार होते हैं। अतः क्रिया का प्रयोग तीन प्रकार से होता है

- कर्तरि प्रयोग** जिस वाक्य में क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन कर्ता के अनुसार होते हैं, वहाँ क्रिया के इस प्रयोग को 'कर्तरि प्रयोग' कहते हैं; जैसे—
 - राहुल अच्छी पुस्तकें पढ़ता है। (क्रिया कर्ता के अनुसार)
- कर्मणि प्रयोग** जिस वाक्य में क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन कर्म के अनुसार होते हैं, वहाँ क्रिया के इस प्रयोग को 'कर्मणि प्रयोग' कहते हैं; जैसे—
 - गीता को पुस्तक पढ़नी पड़ेगी। (क्रिया कर्म के अनुसार)
- भावे प्रयोग** जिस वाक्य में क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन कर्ता के अनुसार न होकर सदैव अन्य पुरुष, पुल्लिङ्ग तथा एकवचन में हों, तब 'भावे प्रयोग' होता है; जैसे—
 - मुझसे चला नहीं जाता। (क्रिया भाव के अनुसार)

मध्यान्तर प्रश्नावली

1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को क्या कहते हैं?
(a) विशेषण (b) सर्वनाम (c) क्रिया (d) कारक
2. हिन्दी में सर्वनामों की कितनी संख्या है?
(a) बारह (b) ग्यारह (c) तेरह (d) दस
3. 'मोहन प्रकाशजी हिन्दी पढ़ाते हैं' इस वाक्य में रिक्त स्थान की पूर्ति अन्यपुरुषवाचक सर्वनाम से करें।
(a) मुझे (b) तुम्हें (c) उन्हें (d) हमें
4. 'मुझे' शब्द किस प्रकार का सर्वनाम है?
(a) उत्तम पुरुष (b) मध्यम पुरुष
(c) अन्य पुरुष (d) इनमें से कोई नहीं
5. निश्चयवाचक सर्वनाम कौन-सा है?
(a) कौन (b) कुछ (c) कोई (d) वह
6. जो शब्द संज्ञा व सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?
(a) अव्यय (b) क्रिया (c) कारक (d) विशेषण
7. निम्नलिखित में से विशेष्य क्या है?
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम (c) कारक (d) 'a' और 'b'
8. प्रविशेषण किसे कहते हैं?
(a) विशेषण की विशेषता बताने वाला शब्द
(b) विशेष्य के पहले लगने वाला शब्द
(c) विशेष्य की विशेषता बताने वाला शब्द
(d) विधेय की विशेषता बताने वाला शब्द
9. विशेषण कितने प्रकार के होते हैं?
(a) तीन (b) चार (c) छः (d) पाँच
10. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द गुणवाचक है?
(a) यह (b) थोड़ा (c) दस (d) कपटी
11. क्रिया का रूप किसके अनुसार बदलता है?
(a) वचन (b) लिंग (c) पुरुष (d) ये तीनों
12. क्रिया का मूल रूप क्या है?
(a) धातु (b) कारक
(c) क्रिया-विशेषण (d) इनमें से कोई नहीं
13. कर्म के अनुसार क्रिया के कितने भेद हैं?
(a) तीन (b) दो
(c) चार (d) पाँच
14. किस वाक्य में सकर्मक क्रिया है?
(a) सीता हँसती है। (b) मोहन जाता है।
(c) राधा दौड़ती है। (d) राम फल खाता है।
15. किस वाक्य में अकर्मक क्रिया है?
(a) गीता खाना पकाती है। (b) श्याम पत्र लिखता है।
(c) सीता गाती है। (d) माता फल काटती है।

उत्तरमाला

- | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (b) | 2. (b) | 3. (d) | 4. (a) | 5. (d) |
| 6. (d) | 7. (d) | 8. (a) | 9. (b) | 10. (d) |
| 11. (d) | 12. (a) | 13. (b) | 14. (d) | 15. (c) |

काल

काल (Tense) क्रिया के उस रूप को कहते हैं, जिससे उसके करने या होने के समय तथा पूर्णता या अपूर्णता का ज्ञान होता है। काल के तीन भेद हैं

1. वर्तमान काल (Present Tense)
2. भूतकाल (Past Tense)
3. भविष्यत् काल (Future Tense)

1. वर्तमान काल

क्रिया के जिस रूप से वर्तमान समय में क्रिया का होना पाया जाए, उसे वर्तमान काल (Present Tense) कहते हैं।

वर्तमान काल के छः भेद हैं

| वर्तमान काल के भेद | परिभाषा व उदाहरण |
|--------------------|---|
| सामान्य वर्तमान | क्रिया का वह रूप जिससे वर्तमान काल में क्रिया का होना पाया जाए, सामान्य वर्तमान कहलाता है; जैसे— • लड़का पढ़ता है। |
| संदिग्ध वर्तमान | क्रिया का वह रूप जिससे वर्तमान काल में क्रिया के होने में सन्देह पाया जाए, उसे संदिग्ध वर्तमान कहते हैं; जैसे— • राम पढ़ता होगा। |
| अपूर्ण वर्तमान | क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल में क्रिया की अपूर्णता का बोध होता है, उसे अपूर्ण वर्तमान कहते हैं; जैसे— • वह पढ़ रहा है। |
| पूर्ण वर्तमान | क्रिया का वह रूप जिससे वर्तमान काल में कार्य की पूर्ण सिद्धि का बोध होता है; जैसे— • सीता ने पुस्तक पढ़ी है। |
| तात्कालिक वर्तमान | क्रिया का वह रूप जिससे यह पता चले कि क्रिया वर्तमान काल में हो रही है; जैसे— • मैं गा रहा हूँ। |
| सम्भाव्य वर्तमान | क्रिया का वह रूप जिससे वर्तमान काल में कार्य पूरा होने की सम्भावना रहती है; जैसे— • सम्भवतः वह लिखता हो। |

2. भूतकाल

क्रिया के जिस रूप से कार्य की समाप्ति का बोध हो, उसे भूतकाल (Past Tense) कहते हैं। दूसरे शब्दों में, जिस क्रिया से बीते हुए समय में क्रिया का होना पाया जाता है, उसे भूतकाल कहते हैं। भूतकाल के छः भेद हैं

| भूतकाल के भेद | परिभाषा व उदाहरण |
|---------------|---|
| सामान्यभूत | क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का निश्चित ज्ञान न हो, उसे सामान्यभूत कहते हैं; जैसे— • श्याम गया। |
| आसन्नभूत | क्रिया के जिस रूप से क्रिया के व्यापार का समय आसन्न (निकट) ही समाप्त समझा जाए, उसे आसन्नभूत कहते हैं; जैसे— • सीता आ चुकी है। |
| अपूर्णभूत | क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाए कि क्रिया भूतकाल में हो रही थी, लेकिन उसकी समाप्ति का पता न चले, उसे 'अपूर्णभूत' कहते हैं; जैसे— • सितार बज रहा था। |
| पूर्णभूत | क्रिया के जिस रूप से बीते समय में कार्य की समाप्ति का पूर्ण बोध होता है, उसे पूर्णभूत कहते हैं; जैसे— • मैं खाना खा चुका था। |

| भूतकाल के भेद | परिभाषा व उदाहरण |
|----------------|---|
| संदिग्धभूत | क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में कार्य के पूर्ण होने या न होने में सन्देह होता है, उसे संदिग्धभूत (Doubtful Past) कहते हैं; जैसे— • श्याम ने गाया होगा। |
| हेतुहेतुमद्भूत | क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया भूतकाल में होने वाली थी पर किसी कारणवश न हो सकी, उसे हेतुहेतुमद्भूत (Conditional Past) कहते हैं; जैसे— • यदि वह पढ़ता तो परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता। |

3. भविष्यत् काल

क्रिया के जिस रूप से भविष्य में होने वाली क्रिया का बोध हो, उसे भविष्यत् काल (Future Tense) कहते हैं। भविष्यत् काल के तीन भेद हैं

| भविष्यत् काल के भेद | परिभाषा व उदाहरण |
|----------------------|---|
| सामान्य भविष्यत् | क्रिया के जिस रूप से भविष्य में होने वाले कार्य के सम्बन्ध में जानकारी हो अथवा यह व्यक्त हो कि क्रिया सामान्यतः भविष्य में होगी, उसे सामान्य भविष्यत् कहते हैं; जैसे— • लता गीत गाएगी। |
| सम्भाव्य भविष्यत् | क्रिया का वह रूप जिससे कार्य होने की सम्भावना का बोध हो, उसे सम्भाव्य भविष्यत् कहते हैं; जैसे— • सम्भव है कि वह कल जाएगा। |
| हेतुहेतुमद् भविष्यत् | क्रिया का वह रूप जिससे भविष्य में एक समय में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर हो, हेतुहेतुमद् भविष्यत् कहलाता है; जैसे— • राम जाए तो मैं बजाऊँ। |

अव्यय

अव्यय दो शब्दों 'अ + व्यय' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है—जो व्यय न हो अर्थात् जिसमें कोई परिवर्तन न हो, उसे अव्यय (Indeclinables) कहते हैं। इसे अविकारी शब्द भी कहते हैं, क्योंकि इसमें किसी प्रकार का विकार नहीं होता; जैसे—जब, तब, इधर, उधर, यहाँ, वहाँ, किन्तु, परन्तु, बल्कि, इसलिए, अतः, और, तथा, एवं, कब, वह, आदि। अव्यय चार प्रकार के होते हैं

1. क्रिया-विशेषण
2. सम्बन्धबोधक
3. समुच्चयबोधक
4. विस्मयादिबोधक

1. क्रिया-विशेषण

जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें 'क्रिया-विशेषण' (Adverb) कहते हैं। क्रिया-विशेषण को अविकारी विशेषण भी कहते हैं; जैसे—

- धीरे चलो।

वाक्य में 'धीरे' शब्द 'चलो' क्रिया की विशेषता बताता है। अतः 'धीरे' शब्द क्रिया-विशेषण है। इसके अतिरिक्त क्रिया-विशेषण दूसरे क्रिया-विशेषण की भी विशेषता बताता है; जैसे—

- वह बहुत धीरे चलता है।

इस वाक्य में 'बहुत' क्रिया-विशेषण है और यह दूसरे क्रिया-विशेषण 'धीरे' की विशेषता बतलाता है।

अर्थ की दृष्टि से क्रिया-विशेषण के भेद

अर्थ की दृष्टि से क्रिया-विशेषण के चार भेद हैं

स्थानवाचक

जिन शब्दों से क्रिया में स्थान सम्बन्धी विशेषता प्रकट हो, उन्हें स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं; जैसे—यहाँ, वहाँ, जहाँ, तहाँ, कहाँ, वहीं, कहीं, हर जगह, सर्वत्र, बाहर-भीतर, आगे-पीछे, ऊपर-नीचे, कहीं-कहीं, अन्यत्र इत्यादि। स्थानवाचक क्रिया-विशेषण से 'कहाँ' का उत्तर मिलता है।

स्थानवाचक के दो भेद माने जाते हैं

- (i) स्थितिवाचक यहाँ, वहाँ, भीतर, बाहर इत्यादि।
- (ii) दिशावाचक इधर, उधर, दाएँ, बाएँ इत्यादि।

कालवाचक

जिन शब्दों से क्रिया में समय सम्बन्धी विशेषता प्रकट हो, उन्हें कालवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसे—अब, कब, तब, जब; आज, कल, परसों; सुबह, दोपहर, शाम; अभी-अभी, कभी-कभी, कभी न कभी, सदा, सर्वदा, सदैव; पहले, पीछे, नित्य, ज्यों ही, त्यों ही, एक बार, पहली बार, आजकल, घड़ी-घड़ी, रातभर, दिनभर, क्षणभर, कितनी देर में, शीघ्र, जल्दी, बार-बार इत्यादि। कालवाचक क्रिया-विशेषण से 'कब' का उत्तर मिलता है।

कालवाचक के तीन उपभेद माने जाते हैं

- (i) समयवाचक आज, कल, अभी, तुरन्त, परसों इत्यादि।
- (ii) अवधिवाचक अभी-अभी, रातभर, दिनभर, आजकल, नित्य इत्यादि।
- (iii) बारम्बारतावाचक हर बार, कई बार, प्रतिदिन इत्यादि।

परिमाणवाचक

जिन शब्दों से क्रिया की परिमाण (नाप-तौल) सम्बन्धी विशेषता प्रकट होती है, उन्हें परिमाणवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसे—इतना, उतना, कितना, जितना, थोड़ा-थोड़ा, बारी-बारी, क्रमशः, कम, अधिक, ज्यादा, पर्याप्त, काफी, केवल, जरा, बस, लगभग, कुछ, बिल्कुल, कहाँ तक, जहाँ तक, पूर्णतया इत्यादि। परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण से 'कितना' का उत्तर मिलता है।

परिमाणवाचक के पाँच भेद माने जाते हैं

- (i) अधिकताबोधक बहुत, खूब, अत्यन्त, अति इत्यादि
- (ii) न्यूनताबोधक ज़रा, थोड़ा, किंचित, कुछ इत्यादि
- (iii) पर्याप्तबोधक बस, यथेष्ट, काफी, ठीक इत्यादि
- (iv) तुलनाबोधक कम, अधिक, इतना, उतना इत्यादि
- (v) श्रेणीबोधक बारी-बारी, तिल-तिल, थोड़ा-थोड़ा इत्यादि

रीतिवाचक

जिन शब्दों से क्रिया की रीति सम्बन्धी विशेषता प्रकट होती है, उन्हें रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। रीतिवाचक क्रिया-विशेषणों की संख्या बहुत बड़ी है। जिन क्रिया-विशेषणों का समावेश दूसरे वर्गों में नहीं हो सकता, उनकी गणना इसी में की जाती है। रीतिवाचक क्रिया-विशेषण से 'कैसे' का उत्तर मिलता है। रीतिवाचक क्रिया-विशेषण को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है

- प्रकारबोधक ऐसे, कैसे, वैसे, मानो, अचानक, धीरे-धीरे, स्वयं, परस्पर, आपस में, यथाशक्ति, फटाफट, झटपट, आप ही आप इत्यादि।
- निश्चयबोधक निःसन्देह, अवश्य, बेशक, सही, सचमुच, जरूर, अलबत्ता, दरअसल, यथार्थ में, वस्तुतः इत्यादि।
- अनिश्चयबोधक कदाचित्, शायद, सम्भव है, हो सकता है, प्रायः यथासम्भव इत्यादि।

- स्वीकारबोधक हाँ, हाँ जी, ठीक, सच इत्यादि।
- निषेधबोधक न, नहीं, गलत, मत, झूठ इत्यादि।
- कारणबोधक इसलिए, क्योंकि, काहे को इत्यादि।
- अवधारणबोधक तो, ही, भी, मात्र, भर, तक इत्यादि।

रूप/रचना की दृष्टि से क्रिया-विशेषण के भेद

रूप/रचना की दृष्टि से क्रिया-विशेषण के दो भेद होते हैं

- मूल क्रिया-विशेषण** जो क्रिया-विशेषण किसी दूसरे शब्द से नहीं बने, बल्कि स्वतन्त्र रूप वाले होते हैं, उन्हें मूल क्रिया-विशेषण कहते हैं; जैसे—नहीं, दूर, फिर, ठीक, आज, बस, इधर इत्यादि।
- यौगिक क्रिया-विशेषण** जो क्रिया-विशेषण किसी दूसरे शब्द की सहायता से बनते हैं, उन्हें यौगिक क्रिया-विशेषण कहते हैं; जैसे—यहाँ पर, मन से, हर बार, यहाँ तक इत्यादि। यौगिक क्रिया-विशेषण तीन प्रकार से बनते हैं
 - शब्द भेदों में प्रत्यय या शब्दांश जोड़कर—रातभर, नियम से इत्यादि।
 - शब्दों की द्विरुक्ति से—पल-पल, अभी-अभी इत्यादि।
 - भिन्न-भिन्न शब्दों के मेल से—घर-बाहर, सुबह-शाम इत्यादि।

2. सम्बन्धबोधक

जिन अविकारी शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों से प्रकट होता है, उन्हें 'सम्बन्धबोधक अव्यय' (Preposition) कहते हैं; जैसे—

- मैं गोपाल के बिना नहीं जाऊँगा।

इस वाक्य में 'बिना' शब्द 'गोपाल' और 'मैं' के बीच सम्बन्ध प्रकट करता है। अतः बिना शब्द सम्बन्धबोधक अव्यय है।

सम्बन्धबोधक अव्ययों का वर्गीकरण तीन आधारों पर किया गया है

प्रयोग के आधार पर

सम्बन्धबोधक अव्यय का प्रयोग तीन प्रकार से होता है

| अव्यय | प्रयोग |
|--------------|---|
| विभक्ति सहित | जिन अव्यय शब्दों का प्रयोग कारक विभक्तियों (ने, को, से इत्यादि) के साथ होता है; उन्हें विभक्ति सहित सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—यथा, पास, लिए इत्यादि। |
| विभक्ति रहित | जिस अव्यय का प्रयोग बिना कारक विभक्तियों के होता है, उसे विभक्ति रहित सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—रहित, सहित इत्यादि। |
| उभयविधि | जिस अव्यय का प्रयोग विभक्ति सहित और विभक्ति रहित दोनों प्रकार से होता है, उसे उभयविधि सम्बन्धबोधक कहते हैं; जैसे—द्वारा, बिना इत्यादि। |

अर्थ के आधार पर

सम्बन्धबोधक अव्यय तेरह प्रकार के होते हैं

| अव्यय | प्रयोग |
|-----------|--|
| कालवाचक | जिन अव्यय शब्दों से समय का बोध होता है, उन्हें 'कालवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय' कहते हैं; जैसे—के आगे, के पीछे, के बाद में, के पश्चात्, उपरान्त इत्यादि। |
| स्थानवाचक | जिन अव्यय शब्दों से स्थान का बोध हो उन्हें स्थानवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—के आगे, के पीछे, ऊपर, नीचे, सामने, निकट, भीतर इत्यादि। |

| अव्यय | प्रयोग |
|--------------------|---|
| दिशावाचक | जिन अव्यय शब्दों से किसी दिशा का बोध होता है, उन्हें दिशावाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—की ओर, तरफ, के आस-पास, के प्रति, के आर-पार इत्यादि। |
| साधनवाचक | जिन अव्यय शब्दों से किसी साधन का बोध होता है, उन्हें साधनवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—माध्यम, मार्फत, द्वारा, सहारे, ज़रिए इत्यादि। |
| कारणवाचक/हेतु वाचक | जिन अव्यय शब्दों से किसी कारण का बोध होता है, उन्हें कारणवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं, इसे 'हेतु वाचक' भी कहा जाता है; जैसे—कारण, हेतु, वास्ते, निमित्त, खातिर इत्यादि। |
| सादृश्यवाचक | जिन अव्यय शब्दों से समानता का बोध होता है, उन्हें सादृश्यवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—के समान, की तरह, के जैसा, वैसा ही इत्यादि। |
| विरोधवाचक | जिन अव्यय शब्दों से प्रतिकूलता या विरोध का बोध होता है, उन्हें विरोधवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—के विरुद्ध, के प्रतिकूल, के विपरीत, से उल्टा इत्यादि। |
| संग्रहवाचक | जिन अव्यय शब्दों से किसी संग्रह का पता चलता है, उन्हें संग्रहवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—तक, पर्यन्त, भर, मात्र इत्यादि। |
| विषयवाचक | जिन अव्यय शब्दों से विषय का बोध हो, उन्हें विषयवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—के लेखे, की बावत, के भरोसे, निस्वत, के मद्दे इत्यादि। |
| विनिमयवाचक | जिन अव्यय शब्दों से विनिमय का बोध हो, उन्हें विनिमयवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—के बदले, की जगह, के एवज में इत्यादि। |
| व्यतिरेकवाचक | जिन अव्यय शब्दों से व्यतिरेक (अभाव या अन्त) का बोध हो, उन्हें व्यतिरेकवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—के बिना, के अलावा, के सिवा, के अतिरिक्त इत्यादि। |
| साहचर्यवाचक | जिन अव्यय शब्दों से सहचर (साथ) का बोध हो, उन्हें सहचरवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—के संग, साथ, के सहित, समेत इत्यादि। |
| तुलनावाचक | जिन अव्यय शब्दों से तुलना का बोध हो, उन्हें तुलनावाचक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—की अपेक्षा, बनिस्पत्त, के सामने इत्यादि। |

व्युत्पत्ति या रूप के आधार पर

सम्बन्धबोधक अव्यय दो प्रकार के होते हैं, जो निम्न हैं

| | |
|--------------------------|---|
| मूल सम्बन्धबोधक | जो अव्यय किसी दूसरे शब्द के योग से नहीं बनते अपितु अपने मूलरूप में ही रहते हैं, उन्हें मूल सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—बिना, समेत, तक इत्यादि। |
| यौगिक सम्बन्धबोधक | जो अव्यय संज्ञा, विशेषण, क्रिया इत्यादि के योग से बनते हैं, उन्हें यौगिक सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—पर्यन्त (परि + अन्त)। |

3. समुच्चयबोधक

जो अव्यय क्रिया या संज्ञा की विशेषता न बतलाकर शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें 'समुच्चयबोधक अव्यय' (Conjunction) कहते हैं; जैसे—

- अखिल और सुहेल कॉलेज को जाते हैं।

इस वाक्य में 'और' शब्द अखिल और सुहेल को क्रिया 'जाते हैं' से जोड़ता है इसलिए यहाँ 'और' शब्द समुच्चयबोधक है।

प्रयोग की दृष्टि से समुच्चयबोधक अव्यय के भेद

प्रयोग की दृष्टि से समुच्चयबोधक अव्यय के दो भेद हैं

- (i) **समानाधिकरण समुच्चयबोधक** जो अव्यय दो या दो-से-अधिक पदों, शब्दों या वाक्यों का संयोजन-विभाजन करते हैं, उन्हें समानाधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं। इसके चार भेद निम्न हैं

| |
|---|
| संयोजक तथा, एवं, और, व, या इत्यादि। |
| विभाजक अथवा, या, वा, किंवा, कि, चाहे, नहीं तो इत्यादि। |
| विरोधदर्शक वरन्, मगर, किन्तु, परन्तु, लेकिन पर इत्यादि। |
| परिणामदर्शक अतः, अतएव, इसलिए इत्यादि। |

- (ii) **व्यधिकरण समुच्चयबोधक** जो अव्यय मुख्य वाक्य से एक या एक से अधिक आश्रित वाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। इसके चार भेद हैं

| |
|---|
| कारणवाचक इसलिए, कि, जो कि, क्योंकि इत्यादि। |
| उद्देश्यवाचक ताकि, जो, इसलिए, कि इत्यादि। |
| संकेतवाचक यदि तो, जो तो, यद्यपि, तथापि इत्यादि। |
| स्वरूपवाचक अर्थात्, मानो, यानि, कि, जो इत्यादि। |

रचना की दृष्टि से समुच्चयबोधक अव्यय के भेद

रचना की दृष्टि से समुच्चयबोधक अव्यय के दो भेद हैं

- (i) **रूढ़ समुच्चयबोधक अव्यय** इसके अन्तर्गत और, एवं, कि, यदि इत्यादि आते हैं।
- (ii) **यौगिक समुच्चयबोधक अव्यय** इसके अन्तर्गत क्योंकि, यद्यपि, तथापि, न न, जो तो, यदि तो इत्यादि आते हैं।

4. विस्मयादिबोधक

जिन अव्यय शब्दों से हर्ष, विस्मय, शोक, लज्जा, ग्लानि इत्यादि मनोभाव प्रकट होते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक (Interjection) अव्यय कहते हैं; जैसे—

- हाय! वह चल बसा।, वाह! क्या मौसम है।

विस्मयादिबोधक निम्नलिखित प्रकार के होते हैं

| | |
|--------------|--|
| हर्षबोधक | अहा! वाह! वाह-वाह इत्यादि। |
| शोकबोधक | हाय! हा! ऊँह! उफ! त्राहि-त्राहि इत्यादि। |
| प्रशंसाबोधक | शाबाश! खूब! इत्यादि। |
| तिरस्कारबोधक | राम-राम! थू-थू! छिः! छिः! धत्! धिक् इत्यादि। |
| आश्चर्यबोधक | अरे! हैं! ऐ! ओह! इत्यादि। |
| क्रोधबोधक | अबे! पाजी! अजी! इत्यादि। |
| व्यथाबोधक | हाय रे! बाप रे! अरे दादा! ऊँह इत्यादि। |
| विनयबोधक | जी! जी हाँ! हजूर! साहब इत्यादि। |
| स्वीकारबोधक | ठीक! हाँ-हाँ! अच्छा! बहुत अच्छा इत्यादि। |

निपात

निपात का प्रयोग अव्ययों के लिए होता है। इनका कोई लिंग, वचन नहीं होता। निपातों का प्रयोग निश्चित शब्द या पूरे वाक्य को श्रव्य भावार्थ प्रदान करने के लिए होता है। निपात सहायक शब्द होते हुए भी वाक्य के अंग नहीं होते। निपात का कार्य शब्द समूह को बल प्रदान करना भी है।

निपात के निम्नलिखित प्रकार हैं

- **स्वीकृतिबोधक** हाँ, जी, जी हाँ।
- **नकारबोधक** जी नहीं, नहीं।

- निषेधात्मक मत।
- प्रश्नबोधक क्या।
- विस्मयादिबोधक क्या, काश।
- तुलनाबोधक सा।
- आदरबोधक जी।
- बलप्रदायक तो, ही, भी, तक, भर, सिर्फ, केवल।
- अवधारणाबोधक ठीक, करीब, लगभग, तकरीबन।

पद-परिचय

वर्णों का सार्थक समूह 'शब्द' कहलाता है, किन्तु जब उन्हीं शब्दों को विभक्तियों के साथ वाक्य में प्रयुक्त किया जाता है, तब वे शब्द 'पद' कहलाते हैं; जैसे— राम, पुस्तक, बच्चे, केला इत्यादि।

- राम पढ़ता है।
- उसने नई पुस्तक खरीदी।
- बच्चे खेल रहे हैं।
- वह हँस रहा है।

पद-परिचय से तात्पर्य है—पदों का विश्लेषण। वाक्य में प्रयुक्त पदों का व्याकरणिक परिचय ही **पद-परिचय** कहलाता है। इसे 'पद व्याख्या' या 'पदान्वय' भी कहा जाता है। अन्य शब्दों के साथ किसी वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया-विशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक अथवा विस्मयादिबोधक इत्यादि शब्दों का जिस रूप में प्रयोग हुआ है, उन्हें स्पष्ट करना ही पद-परिचय कहलाता है। किसी पद का परिचय देने के लिए उस शब्द अथवा पद का भेद, उपभेद, लिंग, वचन, कारक, कर्ता इत्यादि के सम्बन्ध का परिचय दिया जाता है।

पद-परिचय करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाना अत्यन्त आवश्यक है

- प्रत्येक पद को अलग-अलग करना चाहिए।
- प्रत्येक पद के प्रकार बताने चाहिए।
- वाक्य में उसका दूसरे पदों से सम्बन्ध बताना चाहिए।
- वाक्य में उसका कार्य बताना चाहिए।

पद-परिचय के भेदों का उदाहरण सहित विवरण

1. **संज्ञा भेद** (जातिवाचक, व्यक्तिवाचक एवं भाववाचक) लिंग, वचन, कारक, क्रिया तथा अन्य शब्दों से उसका सम्बन्ध; जैसे—

- गौरव हास्य की एक पुस्तक पढ़ता है।

गौरव व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक
हास्य की भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, सम्बन्ध कारक
पुस्तक जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म कारक

2. **सर्वनाम भेद** (पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक, प्रश्नवाचक एवं निजवाचक) लिंग, वचन, कारक या अन्य शब्दों से उसका सम्बन्ध; जैसे—

- मैं तुमसे कुछ पूछूँगा।

मैं पुरुषवाचक सर्वनाम (उत्तम पुरुष), एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक
तुमसे पुरुषवाचक सर्वनाम (मध्यम पुरुष), स्त्रीलिंग-पुल्लिंग दोनों लिंगों में सम्भव, एकवचन, करण कारक

कुछ अनिश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक

3. **विशेषण भेद** (गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक एवं सार्वनामिक) लिंग, वचन, कारक, विशेषणानुसार विशेष्य; जैसे—

- मेरे बगीचे में दो नीले फूल हैं।

दो संख्यावाचक विशेषण (निश्चित), 'फूल' विशेष्य
नीले गुणवाचक विशेषण, बहुवचन, पुल्लिंग

4. **क्रिया भेद** (अकर्मक एवं सकर्मक) धातु, वाच्य, काल (भूतकाल, वर्तमानकाल एवं भविष्यत् काल—उपभेद सहित) लिंग, वचन, कर्ता, कर्म इत्यादि से सम्बन्ध; जैसे—

• जब वह स्टेशन पहुँचा, तब गाड़ी चल रही थी।

पहुँचा अकर्मक क्रिया, सामान्य भूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य
चल रही थी सकर्मक क्रिया, अपूर्ण भूतकाल, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्तृवाच्य (संयुक्त क्रिया भी)

5. **क्रिया-विशेषण भेद** (स्थानवाचक, कालवाचक, रीतिवाचक एवं परिमाणवाचक) उस क्रिया का निर्देश, जिसकी विशेषता बताई जा रही है; जैसे—

• जब खाओ, कम बोलो।

जब कालवाचक क्रिया-विशेषण, 'खाओ' क्रिया का विशेषण

कम परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण, 'बोलो' क्रिया का विशेषण

6. **सम्बन्धबोधक भेद** जिन पदों अथवा उपवाक्यों का सम्बन्ध बताया जा रहा है; जैसे—

• वह खुशी के मारे चीख पड़ा।

के मारे कारणवाचक सम्बन्धबोधक अव्यय (सम्बन्धी शब्द 'खुशी')

7. **समुच्चयबोधक भेद** (संयोजक एवं विभाजक) जोड़ने वाले शब्दों अथवा वाक्यों का निर्देश; जैसे—

• वह आया और मैं चला गया।

और समुच्चयबोधक, समानाधिकरण

8. **विस्मयादिबोधक भाव** (हर्ष, शोक, घृणा, भय, विस्मय, क्रोध इत्यादि) जिस किसी को भी प्रकट कर रहा है, उसका निर्देश; जैसे—

• आह! कितना सुन्दर दृश्य है।

आह! विस्मयादिबोधक (हर्षसूचक)

9. **निपात** (स्वीकृतिबोधक, नकारबोधक, निषेधात्मक, प्रश्नबोधक, विस्मयादिबोधक, तुलनाबोधक, अवधारणाबोधक, आदरबोधक, बलप्रदायक) इनके प्रयोग से वाक्य का समग्र (सम्पूर्ण/पूरा) अर्थ प्रभावित होता है; जैसे—

• सुरेश ने ही मुझे मारा।

ही निपात (बलप्रदायक)

मध्यान्तर प्रश्नावली

1. क्रिया के जिस रूप से उसके होने का समय तथा उसकी पूर्णता या अपूर्णता का बोध होता है, उसे क्या कहते हैं?

(a) काल (b) अव्यय (c) निपात (d) विशेषण

2. काल के बोध का सम्बन्ध किससे है?

(a) वचन (b) क्रिया (c) संज्ञा (d) अव्यय

3. काल के कितने भेद हैं?

(a) तीन (b) दो (c) चार (d) पाँच

4. भूतकाल के कितने भेद हैं?

(a) सात (b) पाँच (c) आठ (d) छः

5. 'श्याम ने गाना गाया होगा'। वाक्य में प्रयुक्त है?

(a) आसन्नभूत (b) संदिग्धभूत
(c) पूर्णभूत (d) सामान्य भूत

6. जिन शब्दों का रूप सदैव समान रहता है, उन्हें कहते हैं।

(a) अव्यय (b) वचन
(c) क्रिया (d) लिंग

7. अव्यय कितने प्रकार के होते हैं?

(a) तीन (b) चार (c) पाँच (d) दो

8. 'धीरे चलो'—में अव्यय का कौन-सा प्रकार है?

(a) क्रिया-विशेषण (b) सम्बन्धबोधक
(c) समुच्चयबोधक (d) विस्मयादिबोधक

9. किस वाक्य में परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण है?

(a) खेल का मैदान लम्बा है।
(b) पंकज अच्छा गायक है।
(c) मैं सफेद कमीज नहीं पहनता।
(d) इस बार बारिश में बहुत ओले पड़े।

10. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द कालवाचक क्रिया-विशेषण है?

(a) बारी-बारी (b) भीतर
(c) आज (d) यथासम्भव

उत्तरमाला

1. (a) 2. (b) 3. (a) 4. (d) 5. (b)
6. (a) 7. (b) 8. (a) 9. (d) 10. (c)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

1. 'खूँटी' शब्द का बहुवचन बताइए (लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) खूँटियाँ (b) खूँटियाँ (c) खूँटियों (d) खूँटिया
2. 'हमारी अध्यापिका आज नहीं आएँगी' इस वाक्य का पुल्लिङ्ग वाक्य कौन-सा है? (स्टेनोग्राफर परीक्षा 2014, UP सहायक शिक्षक 2019)
(a) हमारा अध्यापक आज नहीं आएगा।
(b) हमारी अध्यापक आज नहीं आएगी।
(c) हमारे अध्यापक आज नहीं आएगा।
(d) हमारे अध्यापक आज नहीं आएँगे।
3. 'कवि' का स्त्रीलिङ्ग रूप क्या है? (उत्तर प्रदेश सहायक अध्यापक 2019)
(a) कवियित्री (b) कवयित्री (c) कवित्री (d) कवयित्री
4. इनमें से कौन-सा शब्द स्त्रीलिङ्ग है? (स्टेनोग्राफर परीक्षा 2014)
(a) क्रोध (b) बुढ़ापा (c) छाया (d) चयन
5. 'एक' का बहुवचन क्या है? (स्टेनोग्राफर परीक्षा 2014)
(a) बहुत (b) अनेक (c) ज्यादा (d) दो
6. 'पुस्तक' का बहुवचन क्या है? (स्टेनोग्राफर परीक्षा 2014)
(a) पुस्तकें (b) पुस्तकों (c) पुस्तकें (d) पुस्तकाएँ
7. 'कव्वाली' शब्द में कौन-सा लिंग है? (UPSSSC 2019)
(a) पुल्लिङ्ग (b) स्त्रीलिङ्ग (c) नपुंसकलिङ्ग (d) उभयलिङ्ग
8. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द एकवचन तथा बहुवचन दोनों में प्रयोग हो सकता है? (UPTET 2020)
(a) मुनि (b) बेटा (c) लड़का (d) बालिका
9. चिड़िया का बहुवचन रूप है (DSSSB असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) चिड़ियाँ (b) चिड़ियों (c) चिड़ियाएँ (d) चिड़िया
10. 'आयुष्मान' का स्त्रीलिङ्ग क्या है? (UPTET 2020)
(a) आयुष्मती (b) आयुष्यमयी (c) आयुषी (d) आयुष्यी
11. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द पुल्लिङ्ग है? (UPTET 2020)
(a) कढ़ी (b) चील (c) सन्तान (d) सरसों
12. निम्नलिखित वाक्यों में से किसमें पूर्व-कालिक क्रिया है? (DSSSB असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) उसने नहाकर भोजन किया (b) वह धीरे-धीरे खा रहा था
(c) उसने मुझे पुस्तक सौंपी (d) वह शाम को पहुँचेगा
13. पुल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग शब्द-युग्म की दृष्टि से कौन-सा युग्म अशुद्ध है? (DSSSB असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) कर्ता-कत्री (b) नेता-नेत्री
(c) धाता-धात्री (d) दाता-दात्री
14. निम्नलिखित में कौन-सा शब्द युग्म गलत है? (DSSSB असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) चिड़िया-चिड़ियाँ (b) तिथि-तिथियाँ
(c) नदी-नदियाँ (d) जनता-जनताएँ
15. 'नरेश सो रहा था' वाक्य में कौन-सा काल है? (DSSSB असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) पूर्ण भूत (b) अपूर्ण भूत
(c) आसन्न भूत (d) सामान्य भूत
16. निम्नांकित में कौन-सा शब्द स्त्रीलिङ्ग नहीं है? (CGPSC Pre 2014)
(a) सन्तान (b) सवारी (c) बुलबुल (d) भेड़िया
17. निम्नलिखित में स्त्रीलिङ्ग शब्द है (उत्तराखण्ड 'समूह-ग' परीक्षा 2019)
(a) संविधान (b) प्रवेश (c) परिवहन (d) गवेषणा
18. 'चाकू' शब्द का बहुवचन होगा (UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)
(a) चाकू (b) चाकूँ (c) चाकुओं (d) चाकुओ
19. 'विद्वान्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग क्या होगा? (UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)
(a) विधावन्ती (b) विदुषी (c) विद्वन्ती (d) विद्यामती
20. 'वह अगले साल आएगा' इस वाक्य में कौन-सा कारक है? (UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)
(a) कर्म कारक (b) अपादान कारक
(c) सम्बन्ध कारक (d) अधिकरण कारक
21. निम्नलिखित में से किस वाक्य में भविष्यत्काल है? (UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)
(a) मैं आपका आभारी हूँ (b) मैं आपकी प्रतीक्षा करूँगा
(c) मैंने एक पेड़ काट लिया (d) मैं पुस्तक पढ़ने वाला था
22. निम्नलिखित शब्दों में से स्त्रीलिङ्ग शब्द बताइए। (UPSSSC लेखपाल परीक्षा 2015)
(a) दही (b) मसि (c) सिरका (d) आसव
23. निम्न में कौन-सा शब्द पुल्लिङ्ग है? (UPSSSC VDO 2018)
(a) आशा (b) कष्ट (c) क्षमा (d) सेना
24. 'डण्डा' शब्द का बहुवचन क्या होगा? (CGPSC Pre 2019)
(a) डण्डे (b) डण्डा
(c) डण्डा मन (d) बहुत सारे डण्डे
25. 'चारपाई पर भाई साहब बैठे हैं' इस वाक्य में 'चारपाई' किस कारक में है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती 2014)
(a) करण (b) सम्प्रदान (c) अधिकरण (d) कर्म
26. हिन्दी में 'मैं' का बहुवचन है (UPSSSC 2019)
(a) हम (b) हम दोनों (c) हम सब (d) हम लोग
27. पुल्लिङ्ग संज्ञा के स्थान पर स्त्रीलिङ्ग कर देने से 'काला' विशेषण का क्या रूप होगा? (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2019)
(a) काले (b) काला (c) कालों (d) काली
28. निम्नलिखित में विकारी शब्द कौन-सा है? (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती 2014)
(a) आज (b) यथा (c) परन्तु (d) लड़का
29. वह एक सप्ताह बाद आया' इस वाक्य में कौन-सा शब्द क्रिया-विशेषण है? (UPSSSC VDO 2018)
(a) वह (b) एक (c) बाद (d) आया
30. क्रिया का मूल रूप कहलाता है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती 2015)
(a) धातु (b) कारक
(c) क्रिया-विशेषण (d) इनमें से कोई नहीं
31. 'विकारी' शब्द होता है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती 2014)
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) अव्यय (d) विशेषण

32. 'स्त्री कपड़ा सीती है।' यह वाक्य वाच्य में है।
(HSSSC क्लर्क भर्ती परीक्षा 2019)
(a) कर्म (b) भाव
(c) कर्ता (d) इनमें से कोई नहीं
33. निम्नलिखित में से किस वाक्य में सकर्मक क्रिया है? (CGPSC 2013)
(a) राम दौड़ा (b) मैं रुक गया
(c) उसने कार बेच दी (d) राहुल सो गया
34. निम्नलिखित में से कर्तृवाच्य का वाक्य बताइए (CGPSC 2013)
(a) तुलसीदास ने रामचरितमानस लिखी।
(b) राम द्वारा रावण को मारा गया।
(c) आज टहलने चला जाए।
(d) छात्रों द्वारा फुटबाल खेली जाती है।
35. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द उभयलिङ्गी है? (CGPSC 2013)
(a) डॉक्टर (b) विद्वान् (c) अभिनेत्री (d) गायक
36. 'परिश्रमी' शब्द में कौन-से विशेषण का बोध होता है? (UKTET 2011)
(a) गुणवाचक (b) संख्यावाचक (c) परिमाणवाचक (d) सार्वनामिक
37. वे अविकारी शब्द जो वाक्यों, वाक्यांशों अथवा एकाधिक शब्दों को जोड़ते हैं, कहलाते हैं (UPTET 2016)
(a) सम्बन्धवाचक शब्द (b) विस्मयादिबोधक शब्द
(c) क्रिया-विशेषण शब्द (d) समुच्चयबोधक शब्द
38. 'जटिल' विशेषण के लिए निम्नलिखित में से उपयुक्त संज्ञा होगी (RPSC पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) दृष्टि (b) प्रश्न (c) समस्या (d) स्थिति
39. जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा के युग्मों से असत्य युग्म का चयन कीजिए। (UKTET 2011)
- | शब्द | भाववाचक संज्ञा |
|------------|----------------|
| (a) इन्सान | इन्सानियत |
| (b) कुमार | कौमार्य |
| (c) जवान | जवानी |
| (d) नर | नारी |
40. 'वह द्वार-द्वार भीख माँगता चलता है' वाक्य में कौन-सा कारक है? (UPTET 2020)
(a) सम्बन्ध (b) सम्बोधन (c) अधिकरण (d) अपादान
41. निम्नलिखित विकल्पों में से अकर्मक क्रिया है (UK 'समूह-ग' परीक्षा 2019)
(a) पढ़ना (b) हँसना (c) लिखना (d) खाना
42. सम्प्रदान कारक का उदाहरण चुनिए। (UK 'समूह-घ' परीक्षा 2019)
(a) चिड़िया पेड़ पर बैठी है
(b) अध्यापक ने छात्रों के लिए पुस्तक लिखी
(c) ये मेरे मित्र हैं
(d) वह नदी से जल लाया है
43. वह कौन-सा शब्द है, जो प्रायः बहुवचन में प्रयुक्त होता है? (UKTET 2011)
(a) देव (b) छात्र (c) नक्षत्र (d) प्राण
44. निम्नांकित में अविकारी शब्द है (UPTET 2015)
(a) नारी (b) सरदी (c) परन्तु (d) मीठा
45. 'गोरस' शब्द संज्ञा का कौन-सा प्रकार है? (CGPSC Pre 2020)
(a) द्रव्यवाचक (b) समूहवाचक
(c) भाववाचक (d) जातिवाचक
46. क्रिया से बनने वाली भाववाचक संज्ञा है (UPTET 2015)
(a) थकावट (b) बुराई
(c) आलस्य (d) बुढ़ापा
47. 'यह समस्या मैं आप ही हल कर लूँगा' रेखांकित पद का सर्वनाम भेद बताइए। (HTET 2018)
(a) सम्बन्धवाचक (b) पुरुषवाचक
(c) निजवाचक (d) निश्चयवाचक
48. ऊँचाइयाँ नापनी हैं, तो पर्वतों की सैर करो। रेखांकित पद का संज्ञा भेद इंगित कीजिए। (HTET 2018)
(a) भाववाचक संज्ञा (b) समूहवाचक संज्ञा
(c) व्यक्तिवाचक संज्ञा (d) जातिवाचक संज्ञा
49. रमेश कल दिल्ली जाएगा। इस वाक्य में रेखांकित शब्द है (RPSC पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) संज्ञा (b) क्रिया विशेषण
(c) संज्ञा विशेषण (d) कर्म
50. 'ध्यानपूर्वक' शब्द है (RPSC पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण (b) कालवाचक क्रिया-विशेषण
(c) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण (d) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण
51. 'राम घर गया और श्याम बाजार गया'। इस वाक्य में रेखांकित शब्द है (RPSC पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा 2011)
(a) विकल्पसूचक (b) परिणामदर्शक
(c) संयोजक (d) कारणबोधक
52. 'वह बहुत अच्छा लड़का है' वाक्य में 'वह' कौन-सा सर्वनाम है?
(a) निजवाचक (b) सम्बन्धवाचक
(c) अनिश्चयवाचक (d) निश्चयवाचक
53. 'हिनहिनाना' शब्द है (UKSSSC, VDO 2015)
(a) संज्ञा (b) सर्वनाम
(c) विशेषण (d) क्रिया-विशेषण
54. हिन्दी में 'दाम' शब्द है (मध्य प्रदेश समग्र सुरक्षा परीक्षा 2017)
(a) बहुवचन (b) द्विवचन
(c) एकवचन (d) इनमें से कोई नहीं
55. 'कोई बच्चा नहीं खेलेगा।' रेखांकित शब्द क्या है? (उत्तर प्रदेश वन विभाग 2015)
(a) परिमाणवाचक विशेषण (b) गुणवाचक विशेषण
(c) सार्वनामिक विशेषण (d) सर्वनाम
56. 'चाँदनी चौक' में कौन-सी संज्ञा है? (UPTET 2020)
(a) द्रव्यवाचक (b) भाववाचक
(c) व्यक्तिवाचक (d) जातिवाचक
57. 'आगरा' का बहुवचन होगा (REET 2011)
(a) आगरे (b) आगरों
(c) आगरें (d) बहुवचन नहीं होगा
58. अकारान्त स्त्रीलिंग शब्द का बहुवचन बनाने के लिए क्या किया जाता है? (UPSSSC 2019)
(a) अन्त्य स्वर के बदले 'ओं' कर देते हैं
(b) अन्त्य स्वर के साथ 'अयें' लगा देते हैं
(c) अन्त्य स्वर के बदले 'ऐं' कर देते हैं
(d) अन्त्य स्वर के बदले 'आएँ' कर देते हैं

59. विशेषण से निर्मित भाववाचक संज्ञा पद नहीं है (HTET 2018)
 (a) आत्मीयता (b) नैपुण्य
 (c) धैर्यवक्ता (d) सारल्य
60. 'मनोहर जीवनभर पूरा सुख भोगता रहा' इसमें कौन-सा विशेषण है? (UPTET 2020)
 (a) संख्यावाचक विशेषण (b) सार्वनामिक विशेषण
 (c) गुणवाचक विशेषण (d) परिमाणवाचक विशेषण
61. निम्नलिखित विकल्पों में किस विकल्प में विशेषण का निर्देश अशुद्ध है? (UPTET 2020)
 (a) दूसरा-क्रमवाचक (b) ढाई-अपूर्णांक बोधक
 (c) छब्बीस-पूर्णांक बोधक (d) वह नौकर-कोई विशेषण नहीं है
62. अधोलिखित में से कौन-सा युग्म विशेषण नहीं है? (UPPCS 2016)
 (a) छोटा-बड़ा (b) हरा-पीला
 (c) दो-तीन (d) राम-लक्ष्मण
63. 'वह स्वतः ही जान जाएगा' में वह सर्वनाम है (REET 2011)
 (a) पुरुषवाचक सर्वनाम (b) निजवाचक सर्वनाम
 (c) सम्बन्धवाचक सर्वनाम (d) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
64. 'आप भला तो जग भला' वाक्य में सर्वनाम के किस भेद का बोध होता है? (UPTET 2020)
 (a) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (b) निजवाचक सर्वनाम
 (c) सम्बन्धवाचक सर्वनाम (d) प्रश्नवाचक सर्वनाम
65. 'राम सो रहा है' इस वाक्य में कौन-सी क्रिया है? (UPSSC VDO 2018)
 (a) अकर्मक (b) सकर्मक
 (c) प्रेरणार्थक (d) द्विकर्मक
66. अधोलिखित किस वाक्य में अकर्मक क्रिया है? (UPPCS Pre 2016)
 (a) मैं पुस्तक पढ़ता हूँ (b) ये चीजें तुम्हारा जी ललचाती हैं
 (c) श्याम सोता है (d) वह अपना सिर खुजलाता है
67. निम्नलिखित वाक्यों में से किसमें प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग नहीं है? (UPPCS Pre 2016)
 (a) पिता उसे पढ़ाते हैं (b) राम नहीं पढ़ता
 (c) ये अध्यापक से पढ़ाते हैं (d) अध्यापक परिश्रम कराते हैं
68. 'राम आम खाता है' में वाच्य का कौन-सा रूप है? (UPTET 2020)
 (a) भाववाच्य (b) कर्मवाच्य
 (c) कर्तृवाच्य (d) उभयवाच्य
69. निम्न में भाव वाच्य का उदाहरण है (UPTET 2020)
 I. उससे बैठा नहीं जाता।
 II. राम से खाया नहीं जाता।
 III. राम पत्र लिखता है।
 IV. सीता पुस्तक पढ़ती है।
 कूट
 (a) I, II और IV (b) I, II, III और IV
 (c) I, II और III (d) I और II
70. किस कारक की विभक्ति पूर्व में लगती है (MP समग्र सुरक्षा विस्तार अधिकारी परीक्षा 2017)
 (a) अधिकरण (b) सम्बन्ध
 (c) सम्प्रदान (d) सम्बोधन
71. 'लड़का पत्थर फेंकता है।' यह वाक्य 'कारक के लिए उदाहरण है। (HSSSC क्लर्क परीक्षा 2019)
 (a) कर्म (b) कर्ता
 (c) सम्बन्ध (d) करण
72. 'से (अलगाव)' किस विभक्ति का बोधक चिह्न है? (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2016)
 (a) सम्प्रदान (b) कर्म
 (c) अधिकरण (d) अपादान
73. 'सेनाएँ युद्ध क्षेत्र से आगे बढ़ीं' इस वाक्य में सम्बन्धवाचक शब्द बताइए। (UPSSSC VDO 2018)
 (a) सेनाएँ (b) युद्ध क्षेत्र
 (c) आगे (d) बढ़ीं
74. 'वह आया और मैं गया' इस वाक्य में समुच्चयबोधक शब्द बताइए। (UPSSSC VDO 2018)
 (a) वह (b) आया
 (c) और (d) गया
75. 'वे रिश्ता बनाते थे, तो तोड़ते नहीं थे।' (उत्तराखण्ड 'समूह-ग' परीक्षा 2019)
 (a) संज्ञा (b) सर्वनाम
 (c) समुच्चयबोधक (d) विस्मयबोधक
76. निम्नलिखित में से किस वाक्य में परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण है? (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2016)
 (a) इस बार बारिश में बहुत ओले पड़े
 (b) यह लड़की सुन्दर है
 (c) मैदान हरा-भरा है
 (d) तुम अच्छे खिलाड़ी हो
77. मनोभावों को प्रकट करने वाले वे अविकारी शब्द, जिनका वाक्य से कोई सम्बन्ध नहीं रहता, कहलाते हैं (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2016)
 (a) विकल्पबोधक अव्यय
 (b) समुच्चयबोधक अव्यय
 (c) विस्मयादिबोधक अव्यय
 (d) अनुबद्धबोधक अव्यय
78. निम्नांकित में अविकारी शब्द है (UPTET 2016)
 (a) नारी (b) सर्दी
 (c) परन्तु (d) मीठा
79. जिन शब्दों का प्रयोग वाक्य को श्रव्य भावार्थ और बल प्रदान करने के लिए होता है, लेकिन वे वाक्य के अंग नहीं होते, क्या कहलाते हैं? (UPSSSC कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2016)
 (a) निर्विभक्तिक (b) यौगिक
 (c) मौलिक (d) निपात

80. 'मैंने तो कुछ नहीं किया' वाक्य में 'तो' व्याकरण की दृष्टि से क्या है? (UTET 2013)
 (a) क्रिया-विशेषण (b) कर्ता
 (c) कारक (d) निपात
81. 'मेरे लड़के ने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया' वाक्य में 'लड़के' के विषय में कौन-सा विकल्प अशुद्ध है? (UP TET 2020)
 (a) कर्ता (b) पुल्लिंग
 (c) एकवचन (d) बहुवचन
82. यह पुस्तक किसकी है? में रेखांकित का पद परिचय दीजिए। (UP TET 2018)
 (a) सार्वनामिक विशेषण (पुस्तक विशेष्य), एकवचन, स्त्रीलिंग
 (b) सर्वनाम, एकवचन, स्त्रीलिंग
 (c) गुणवाचक विशेषण (पुस्तक विशेष्य), एकवचन
 (d) सम्बोधन अव्यय
83. ये फल उसके लिए हैं। इस वाक्य में रेखांकित अंश है (HTET 2015)
 (a) अन्य पुरुष, एकवचन, सम्प्रदान
 (b) मध्यम पुरुष, बहुवचन, कर्ता
 (c) मध्यम पुरुष, एकवचन, सम्प्रदान
 (d) उत्तम पुरुष, एकवचन, सम्प्रदान
84. 'जो क्रिया अभी हो रही है' उसे कहते हैं (UPPSC 2018)
 (a) अपूर्ण वर्तमान
 (b) सामान्य वर्तमान
 (c) सन्दिग्ध वर्तमान
 (d) सन्दिग्ध भूत
85. 'मैं खाना खा चुका हूँ'—इस वाक्य में भूतकालिक भेद इंगित कीजिए। (RRB 2001)
 (a) सामान्य भूत (b) पूर्ण भूत
 (c) आसन्न भूत (d) सन्दिग्ध भूत
86. 'मेरा बड़ा बेटा भारत आ रहा है'—रेखांकित पदबन्ध का नाम है
 (a) संज्ञा पदबन्ध (b) सर्वनाम पदबन्ध
 (c) क्रिया-विशेषण पदबन्ध (d) विशेषण पदबन्ध
87. 'नीलिमा धीरे-धीरे चलते हुए घर जा पहुँची' रेखांकित पदबन्ध कौन-सा है?
 (a) क्रिया पदबन्ध
 (b) क्रिया-विशेषण पदबन्ध
 (c) संज्ञा पदबन्ध
 (d) सर्वनाम पदबन्ध
88. निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम पदबन्ध कौन-सा है?
 (a) मंच पर नृत्य करने वाला आज नहीं आया
 (b) मोहन चाय पीकर चला गया
 (c) बस फुटपाथ पर चढ़ गई
 (d) उसने साँप को पीट-पीटकर मार डाला
89. अधोलिखित किस वाक्य में अकर्मक क्रिया है? (UPPSC 2020)
 (a) रामू खाना खा रहा है
 (b) चालक गाड़ी चलाता है
 (c) श्याम हँसता है
 (d) माँ स्वेटर बुनती है

उत्तरमाला

| | | | | | | | | | |
|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|---------|
| 1. (a) | 2. (d) | 3. (b) | 4. (c) | 5. (b) | 6. (a) | 7. (b) | 8. (a) | 9. (a) | 10. (a) |
| 11. (c) | 12. (a) | 13. (a) | 14. (d) | 15. (b) | 16. (d) | 17. (d) | 18. (a) | 19. (b) | 20. (d) |
| 21. (b) | 22. (b) | 23. (b) | 24. (a) | 25. (c) | 26. (a) | 27. (d) | 28. (d) | 29. (c) | 30. (a) |
| 31. (c) | 32. (c) | 33. (c) | 34. (a) | 35. (a) | 36. (a) | 37. (d) | 38. (c) | 39. (d) | 40. (c) |
| 41. (b) | 42. (b) | 43. (d) | 44. (c) | 45. (a) | 46. (a) | 47. (c) | 48. (a) | 49. (b) | 50. (d) |
| 51. (c) | 52. (d) | 53. (d) | 54. (a) | 55. (c) | 56. (c) | 57. (d) | 58. (b) | 59. (c) | 60. (c) |
| 61. (d) | 62. (d) | 63. (a) | 64. (b) | 65. (a) | 66. (c) | 67. (b) | 68. (c) | 69. (d) | 70. (d) |
| 71. (a) | 72. (d) | 73. (c) | 74. (c) | 75. (c) | 76. (a) | 77. (c) | 78. (c) | 79. (d) | 80. (d) |
| 81. (d) | 82. (a) | 83. (a) | 84. (a) | 85. (c) | 86. (a) | 87. (b) | 88. (a) | 89. (c) | |